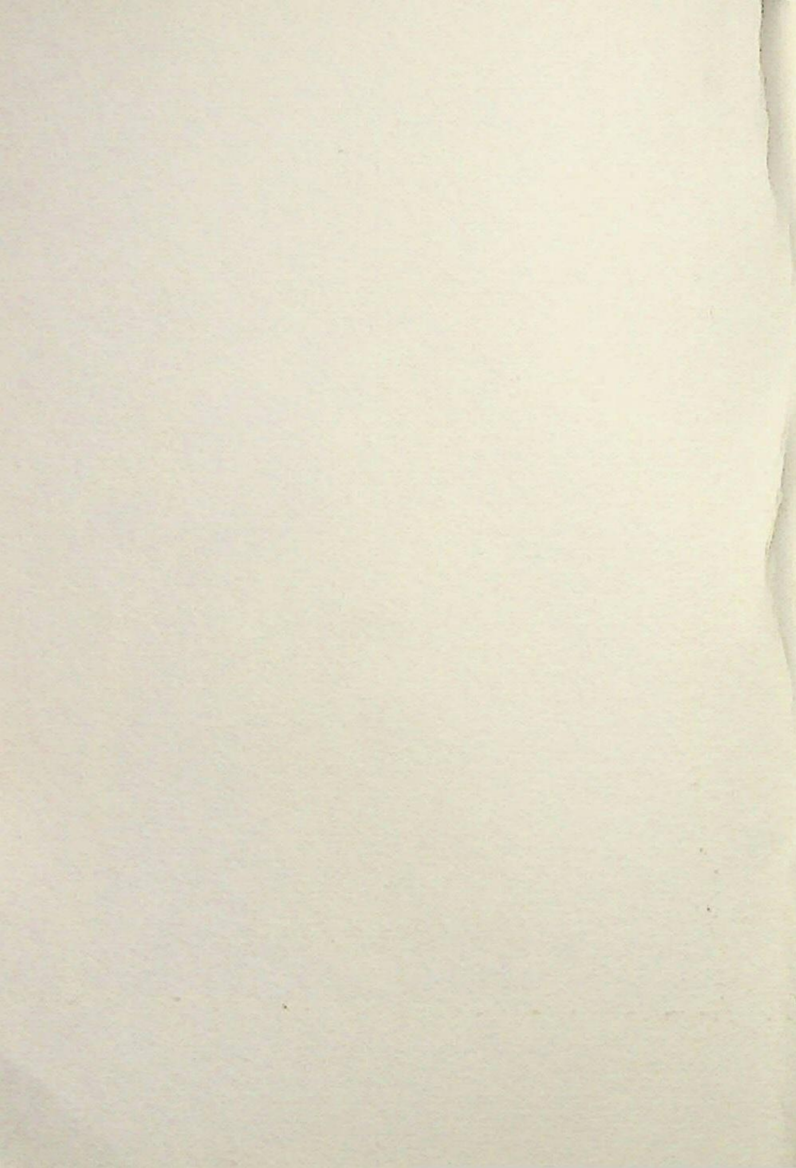
हनुमानबाहुक



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई



श्रीगोस्वामी तुलसीदास-कृत

हनूमानबाहुक

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,™

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

सस्करण : दिसंबर २०१७ संवत् २०७४

मूल्य : ५० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,™

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,

मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers

Khemraj Shrikrishnadass

Prop: Shri Venkateshwar Press

Khemraj Shrikrishnadass Marg,

7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com

E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass

Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,

at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate,

Pune -411 013.





भूमिका.



विदित हो कि अष्टाधिक शत श्रियायुत श्रीमन्म-हाराजाधिराज श्रीसवाई महेन्द्र सर प्रतापसिंह बहा-दुरजू देव के. सी. आई. ई. सरामद राजहाय बुंदे-लखण्ड बुंदेल-वंश- वर-तारा-गण वीरावतंस नायक ओडछाधीश (जिनका प्रताप साम्प्रातिक नरन्द्रोंमें यथार्थही सिंहवत् है यथा नाम तथा गुणः) तिनके शुभ धन धान्यके प्रभावने कि जिससे मेरा शरीर पालन हुआ मेरे हृदयसें यह प्रेरणा की कि कुछ काल यदि महानुभावोंकी वाणीके मनन अनुकथन श्रवणमें व्यतीत हो तो परमोत्तम है इस विचारसे श्रीहनूमान् बाहुककी टीकाका मनोरथ हुआ कि जिसमें श्रीगोस्वामि तुलसीदासजीने श्रीसीताराम–चरण–कमलमकरंदरस-रासिक भक्तशिरोमणि श्रीमहावीरजीका यश वर्णन किया है. यद्यपि भक्त्यनुरागियोंको इस कारणसे कि यह ग्रंथ कल्पवृक्षवत् सांसिद्धिदायक है पठनपाठनकी सर्वदा कांक्षा रहती है परंतु अधिक प्रचारित होनेसे काल पाय पाठान्तर ऐसा हो गया कि जिससे बहुधा स्थलोंका समझना विशेष मतसदृश अल्पज्ञ पुरुषोंको अति क्लिष्टतम भासित होता है और प्रगट है कि

भूमिका।

किसी वस्तुके यथार्थ ज्ञान व्यतिरेक प्रतीति नहीं होती और विना प्रतीतिके सिद्धि कहां।यथा रामायण उत्तरकांड–"कवनिउ सिद्धि कि बिनु विश्वासा" अतएव मैंने अनेक प्राचीन पुस्तकोंको संयोजित करि श्रीरामच-रणानुरागी सर्वशास्त्रवेत्ता श्रीपंडित गंगाप्रसाद तिवारी माडेर-निवासीके द्वारा शुद्ध कराय सरल देश-भाषामें टीका की. यद्यपि मैं अपनेको इस कार्यकें योग्य नहीं समझता था परंतु तौ भी इसके अनुसार कि– "अकरणात् करणं श्रेयः (न करनेसे करना अच्छा है)" कुछ अनुचितभी नहीं समझा अतएव समस्त विद्वानोंसे प्रार्थना है कि जहां कहीं उन्हें इस टीकामें किसी प्रकारकी त्रुटि प्रतीत होवे उसको कृपापूर्वक सुधार लेवें क्योंकि भ्रम होना मनुष्यकी बुद्धिका सहज धर्म है.

श्रीमतः–

दासानुदास ठाकुर बिहारीलाल,
सरिश्तेदार दरबार टीकमगढ,
रियासत ओडछा बुंदेलखंड–झांसी.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

श्रीगोस्वामी तुलसीदास-कृत

हनूमानबाहुक

सटीक ।

दोहा.

श्रीरघुवीर प्रणाम करि, सहित लखन हनुमान ।
राखि हृदय विश्वास दृढ, पुनिपुनि करौं प्रणाम १ ॥

श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी कहै हैं कि मैं निश्चय विश्वास नाम भरोसा पूर्वक श्रीरघुकुलवर्य्य रामचन्द्रजी को लक्ष्मणजी सहित अपने हृदय मे विराजमान करि वारंवार साष्टांग दण्डवत करता हूं । विदित रहै कि यहां तुकान्त नकार मकार की परस्पर मैत्री होनेसे विरोध नहीं है ॥ १ ॥

भौमवार आदिक पढ़ै, जो नर सहित सनेह ।
रुज-संकट व्यापै नहीं, बाढै सुख धन गेह ॥२॥

स्नेह नाम प्रीति सहित भौमवारादि (हनुमतसेवा में भौमवार प्रधान है) सातहूं वारोंको जो मनुष हनूमान-बाहुक का पाठ करै उसको रुज—संकट अर्थात् देहजनित रोगों का दुःख कभी व्याप्त न होगा और गृहविषे सुख और धनकी वृद्धि होगी ॥ २ ॥

शुचि सनेम पढ़िहै जो नर,निरुज गात बलधाम ।
ह्वैहै रति तुलसी सपदि, यश पैहै सब ठाम ॥३॥

तुलसीदास महाराज कहै हैं कि जो पुरुष शुचि अर्थात् क्रियानिष्ठ होकर पूर्व कथित भौमादिवारों को नियम सहित पाठ करै तौ वह निरुज गात अर्थात् शरीरसे नीरोग होकर बलवान् होगा । हनुमच्चर-णारविंदोंमें रति नाम प्रीति होगी और सपदि नाम शीघ्र ही सर्वत्र यश का भागी होगा ॥ ३ ॥

सवैया छंद.

श्रीराम कृपालु विराजत मध्य महा छबि
धाम गहे धनु बाना। वाम दिशा महिजा
सुठि सुंदरि दक्षिण ओर लखन बलवाना॥
चामर पाणिलिये प्रभुके ढिग शोभित वायु-
तनय हनुमाना। तुलसी हिरदे धरु ध्यान
सदा भ्रम संशय त्याग कहो परवाना॥४॥

महा अर्थात् अतुलित छबि नाम शोभा ताके धाम नाम स्थान महाराजाधिराज श्रीरामचंद्रजी धनुष बाण धारण किये सिंहासनके मध्य अर्थात् बीच में विराज रहे हैं। और महिजा अर्थात् महि जो पृथ्वी तातें जा नाम उत्पन्न जो अति सुंदरी जनककिशोरी सो वामभाग में शोभित हो रही हैं और वीर लक्ष्मणजी दक्षिण भागमें विद्यमान हैं और वायुतनय अर्थात् पवनपुत्र श्रीहनुमानजी चामर हाथ में लिये

प्रभु जो श्रीरामचंद्रजी तिनके समीप में शोभित हैं। तुलसीदासजी निश्चय करि कहै हैं कि रे मन! वायुतनयके इस रूप अर्थात् झाँकी का निष्कपट निस्संदेह अपने हृदयमें निरंतर ध्यान करु ॥ ४ ॥

राखु प्रतीति हृदय करु प्रीति अभीति
कपीशपदै अनुरागू । शोच दुराय सुनाय
विनय तुलसी मन भावित सो वर माँगू ॥
मोह नशावन पावनरूप उलंघित वारिधि
वार न लागू । गावतहीं यश वायु तनय
रुज पुंज हरै दल दोष अभागू ॥ ५ ॥

श्रीतुलसीदास महाराज कहै हैं कि रेमन! हृदयमें प्रीति नाम स्नेह पूर्वक प्रतीति अर्थात् विश्वास रखकर अभीत नाम भय रहित जो कपीश श्रीहनुमानजी तिनके चरणारविंदोमें अनुराग नाम प्रेम उत्पन्न कर । शोक जो है दुःख ताको त्याग स्तुतिकर मनवांछितवरदान मांगु अर्थात् याचना करु । मोह जो स्त्री पुत्रादि में स्नेहरूप

अज्ञान ताके नाश करने को समर्थ, पावनरूप अर्थात् निर्मलरूप हैं जिन्हों को अगम्य समुद्रपार जानेमें विलम्ब नहीं हुआ ऐसे वायुतनय श्रीहनूमानजी-का यश गान करनेसे अनेकरोगोंका पुंज नाम समूह नाश होता है और अनेक दुर्भाग्यादि के जे दोष ते सब नाश को प्राप्त होते हैं ॥ ५ ॥

काहू भरोसो है वाहनकौ कोउ बांधवके
बल जोर जनावै। काहू के रूप स्वरूप
घनौ कोउ भूपनके ढिग बैठक पावै॥ काहू
के द्रव्यकौ गर्व घनौ अतिचातुर हो चतुरंग
कहावै। मेरे तो एक तुहीं हनुमान हनौ
किन वाहि जो मोहिं सतावै ॥ ६ ॥

अब अपने को सर्वोपायशून्य बतलाते हैं--किसी को वाहन नाम सवारीका भरोसा है, कोई भाई बंदोंके बल से पुरुषार्थ जनाता है । कोई प्रतिष्ठावान् और रूपवान् है, कोई राजों के समीप बैठक पाता है।

किसीको द्रव्य अभिमान है, कोई चातुर्य्यता के कर्म अनुसार चतुर कहलाता है । मेरे तौ एक आपही का नाम बल है तासे प्रार्थना है कि जो मुझे दुःख देता है वाहि नाम उसे किन नाम क्यों नहीं हनते नाम विनाशते हौ६

छंद—जयति हनुमान बलवान पिंगाक्ष शुचि,
कनक गिरि सरिस तनु रुचिर धीरं । अंज-
नीसूनु सियरामप्रियकीशपति,दलननिश्चर
कटक सूरवीरं ।।दहन शक्रारि वन महाबुध
ज्ञान घन,सुयशकहिनिगम सबसुमतिधीरं।
समुझि भुज जोर कर जोरि तुलसी कहै,
हरहु दुख दुसह भव विषम पीरं ।। ७ ।।

हे वीर हनूमान, हे पिंगाक्ष अर्थात् पिंग कहें पीत हैं अक्षि नेत्र जाके, शुचि कहें निर्मल, जो कनक-गिरी नाम सुवर्ण पर्वत अर्थात् सुमेरु से भी सरिस नाम श्रेष्ठ है तनु नाम शरीर जाको । अंजनीके सूनु नाम पुत्र, सिया जो सीताजी और रामचंद्रजीको अति

प्यारे हैं अथवा सीताराम के प्रिय कर्त्ता, कीशपति वानरोंके राजा निश्चर जो राक्षस तिनका जो भयंकर नाम भयदायक कटक नाम सेना फौज ताके नाश करनेको समर्थ हैं शक्र जो इंद्र ताके अरि नाम शत्रु जो मेघनाद ताके वन के दहन नाम नाश करनेको अग्निरूप हैं, महाबुध अर्थात् सर्वगुणसम्पन्न, ज्ञान जो सदसद्विवेक ताके घन नाम भांडार है जिसका यश नाम कीर्ति निगम नाम वेद और सम्पूर्ण सुमति धीर जे ज्ञानी पुरुष ते गान करते हैं। ऐसा आपका भुजबल समुझि नाम विचारि तुलसीकी हाथ जोरि प्रार्थना है कि दुःसह नाम असह्य जो क्लेश और भव जो संसार ता की जो भीषम पीर अर्थात् जन्म मरण दुःख वाहि दूर करौ ॥ ७ ॥

छप्पय—स्वर्णशैलसंकाशकोटिरवितरुणतेजघन।
उर विशालभुजदंडचंड नखवज्र वज्रतन ॥
पिंगनयनभ्रुकुटीकराल रसनारदआनन ।
कपिश केश कर्कश लँगूल खलदलबल-

आनन ॥ कह तुलसिदास बस जासु
उर मारुतसुत मूरति विकट। संताप ताप
ता पुरुषके सपने नहिं आवत निकट॥८॥

स्वर्ण शैल जो सुमेरु तद्वत् संकाश नाम दीप्तिमान तरुण नाम मध्याह्न कालके कोटिन सूर्य्य सदृश अति प्रतापवान । विशाल कहें चौडा है उर नाम हृदय जिनका, चंड नाम उग्र कराल है भुजदंड नाम भुजा जिनकी, वज्रके समान नख और शरीर जिनका। पिंग नाम पीत है नयन नेत्र जाके, भृकुटी भौंहें, रसना जिह्वा, रद दांत,आनन मुख, यह सब चारों कराल नाम भयंकर हैं। करालशब्द यह प्रत्येक भ्रुकुटी आदि आनन पर्य्यंत विशेष्य पदोंका विशेषण है । कपिश नाम श्यामता युक्त अरुण केश नाम बाल जाके, कर्कश कठोर है लांगूर पुच्छ जिनकी, खल जे दुष्ट तिनको दल नाम सेना ताको जो बल पराक्रम ताके भानन नाम नाश करनेको समर्थ। तुलसीदासजी कहै हैं कि

ऐसी विकट नाम कराल मूर्ति मारुतसुत श्रीहनूमानजी-
की जिसके उर नाम हृदय में बसै हैं ताको
त्रितापका जो संताप नाम दाह स्वप्नमें भी समीप
नहीं आवे है।विदित रहै कि यहां भयंकर मूर्तिका ध्यान
है परंतु दासोंके लिये भय नहीं, नृसिंह स्वरूप को
देखि यद्यपि देवता भयभीत हुए परंतु प्रह्लादजी समीप
गये, व्याघ्र को अपना बच्चा प्यारा ही होता है ॥८॥

कवित्त.

कर्म के पाप परिताप कैधों आपहूतें, बाढी
शीशपीर सो तौ महादुखदाई है। यंत्र मंत्र
टोटकादि औषधि अनेक किये, घटत न नेक
मानौ अवलम्ब पाई है।तुलसी कहत करजोरि
छल छाडि नाथ, तुमतें बली न जग और
अधिकाई है। विनय मान महावीर दूर कीज
शीशपीर,रामदूत तेरौ यश सर्ववेद गाई है॥९॥

अब अपना अभिप्राय कहै हैं कि यह जो महा दुखदाई शीश पीर बढ़ी है कुछ समझ नहीं पडती कि किसी कर्म के पाप का परिताप नाम उदय है, कैधों किसी श्राप का कारण है। यंत्र, मंत्र, टोटक, औषधादि अनेक यत्न किये पर किंचित् मात्र भी नहीं घटती, मानो और भी आधार पा लिया है। निष्कपट हाथ जोरि तुलसीदास प्रार्थना कर हैं कि हे नाथ ! इस संसारमें तुमतें अधिक और कोई बल-वान् नहीं। अतएव हे रामदूत ! मेरी विनय अर्थात् प्रार्थना स्वीकार करि शीशकी पीर दूर कीजिये, आप-का यश मैं ही नहीं किन्तु सर्व वेद गान करे हैं॥९॥

रामकाज लागि अवतार लीन्हो कीशराय,
जनकी सहाय हेतु देर न लगाइये। शील-
धामपूर्णकामआठोंजामलेतनाम, कीशपति
कृपाकरि रोष बिसराइये॥दास शीश पीर
वीर कालनेमि सम जानि,वायुपूत लूममें

लपेटके भ्रमाइये । डाटके चपेट मारि दूर डारि कीशनाह, पुण्य बाहु तुलसीके शीश ढिग ल्याइये ॥ १० ॥

रामावतार पृथ्वीके भार उतारने और जनके सुख देने को हुआ यही रामकार्य है तिस कार्यके सहाय हेतु आपका अवतार है तौ हे कीशराय ! जन की सहाय में विलम्ब न लगाइये । हे शीलधाम, हे पूर्णकाम ! मैं तौ आठों जाम नाम अष्टपहर आपका नाम लेता हूं, यदि कोई चूक पडी होय तौ कृपा करि रोष बिसार दीजै । हे वीर वायुपूत ! दासकी शीश पीर को कालनेमि (राक्षस) सदृश जानि पुच्छ- में लपेटकर भ्रमाइये । हे कीशनाह नाम कीशराज ! क्रोध कर एक चपेट नाम थप्पड मारि दूर कर दीजिये और अपनी पुण्य बाहु नाम पवित्र भुजा तुलसी के शीश समीप ल्याइये ॥ १० ॥

पापके प्रभावकी कै कर्मके सुभावकी कै,
कालकी करालता कै प्रेरी काहू रीस की।
मंत्र यंत्र टोटकीकै दुराचारमोठकीकै, पूर्व
द्विज द्रोह अघ ओघ बिसेबीसकी॥ एते
हेतु संभव पिशाची रूप शिखा पीर,भाग
जाहि वेग वाणी जानि बलीकीशकी।आन
हनुमानकी शपथ बलवानकी, दुहाई कपि-
ईशकी जो रहे पीर शीशकी॥ ११॥

फिर कहते हैं कि कै पाप के प्रभाव से है, कै कर्म के स्वभास से है, कै काल जो कलियुग तिसकी क्रूरता है यद्वा किसी रीस नाम रीस करनेवाले अर्थात् शत्रु से प्रेरित है। अथवा यंत्र, मंत्र, टोटक से है, कै दुष्ट आचरणों के मोठ नाम समूह से है, कैधों पूर्व जन्मके द्विज द्रोह जो बीस बिसे अर्थात् परिपूर्ण हो रहे हैं तिनते उत्पन्न जो अघओघ नाम पापका समूह तिहिकर प्राप्त हुई। पूर्व कथित हेतुतें उत्पन्न रीतु

पिशाच रूप शिखा पीर अब यह वाणी नाम उपदेश बलीकीश महावीरकी जानि शीघ्र ही भाग जा । तुझे हनूमानजी की आन है,बलवान्‌की शपथ है, कपिईश-की दुहाई है जो तू शीश विषें स्थित रहै ॥ ११ ॥

स०—आरत बैन पुकारतही कपि नाथ न नैक
अवार लगाए । राघवदूत अकूत बलीजन
हेतु विशाल लंगूल लफाए॥ शीशकी पीर
निशाचरि लंकिनि पुच्छ समेटि पछारि
भ्रमाए । गात सुभग्ग भए तब हीं जब हीं
तुलसी हनुमान मनाए ॥ १२ ॥

आरत नाम क्लेशित बैन नाम वचन पुकारत ही कपिनाथ अर्थात् कपिराज अकूत नाम अतुलित बल-वान् रामदूत श्रीहनुमानजीने किंचित् हू बिलम्ब न कर अर्थात् तत्क्षण विशाल नाम सुंदर लांगूल जो पुच्छ सो लफाय कर। शीशकी पीर रूप जो निशाचरी नाम राक्षसी लंकिनी ताको पुच्छमें समेट भ्रमाइ कर

पछारी है। तुलसी कहै हैं कि हनूमानजीका स्मरण करते ही मेरा शरीर सुभग्ग अर्थात् सुभग नाम सुंदर अर्थात् निरोगी हो गया॥ १२॥

लोचन पीर प्रवेश कियौ तब पंडित लोग सुनो परवाना। औषधि मूल विचार हिये कर मारुतनंदन के पग ध्याना॥ होइहि लोचन स्वच्छ सुहावन छूटहि पाप व्यथा बलवाना। राम कृपा बल पाय प्रतीति सदाई भजौ तुलसी हनुमाना॥ १३॥

तुलसीदास कहै हैं कि पंडित लोगो! जब नेत्रन-विषें पीरने प्रवेश किया तिसका प्रमाण सुनो कि मैंने अपने हृदय अर्थात् मन में विचार कर कहा कि रे मन! तू मारुतनन्दन के चरणारविंदों का ध्यान धर यही एक मूर औषधि है। इससे नेत्र निर्मल हो जाँयगे और बलवान् पापोंकी जो व्यथा नाम पीडा सो दूर हो जावेगी। इसलिये श्रीरामचंद्रजीकी कृपाका बल

अर्थात् सहाय पाय श्रीहनुमच्चरणारविंदोंको निरंतर प्रीति सहित भजौ नाम स्मरण करौ ॥ १३ ॥

क०–पूरव कुचालकी कराल बाढी नयनपीर, भागभाग मानके प्रतीति मेरे बैनकी । नातर सजाय तोहि देंगे समीरसुत,बावरी न होय वाणी जानि ज्ञान ऐनकी॥तुलसी समीप रहै रामदूत वीर वाके,बिरद बखाने वेद जन सुखदेनकी । आन राम दूतकी शपथ वायुपूतकी,दुहाई बुधऐनकी जो रहै पीर नैनकी ॥ १४ ॥

अब वर्णन करै हैं कि अरी कराल नेत्रपीर ! जे पूर्वकृत कुचाल नाम दुष्ट आचरणोंसे प्रबल हुई हो तौ मेरे वचनकी प्रतीति मानकर भाग ही जा । नहीं तौ समीरसुत पवनपूत तुझे शासना करेंगे, देख बावरी न हो, यह वाणी ज्ञाननिधान हनूमानकी जान । तुलसी कहै हैं कि मैं जन सुखदैन वाके वीर श्रीहनुमानजीके

समीप विद्यमान रहों हों कि जिनकी स्तुति वेद वर्णन करे हैं। रामदूत की आन, वायुपूत की शपथ, बुद्धि-अयन की दुहाई है जो नेत्रविषे पीर रहे ॥ १४ ॥

स०—मारुतनंदनके पग ध्यावत संचित जन्मन
के अघ जाई। नयननके ढिग पीर न
आवहि गावहि वेद सदा सुखदाई ॥ नूतन
निर्मल होहि सदा दृग देखत दुष्ट डरै समु-
दाई। पाय प्रतीति सप्रीति हृदय हनुमान
भजौ तुलसी सचुपाई ॥ १५ ॥

यहां गुणानुवाद करै हैं कि मारुतनंदन के चरणों का स्मरण करनेसे संचितजन्मोंके अर्थात् जन्मांतरोंके पाप नाश होते हैं यह तौ कुत्सित नेत्र पीर ही है। यह पीर नेत्रन के समीप भी नहीं आ सकती है क्योंकि वेद उसको सदैव जन सुखदाई वर्णन करे हैं। किन्तु सदा के निर्मल नवीन नेत्र ऐसे होजावें कि जिनकी दृष्टि-मात्रसे दुष्टोंका समुदाय भयभीत होजाय। तुलसी

कहै हैं कि सचुपाई नाम निश्चय कर प्रीति सहित विश्वास पूर्वक हृदयसे अर्थात् मनसे श्रीहनुमच्चरणारविंदोंको भजो ॥ १५ ॥

अपयश औरनके सुन के तब नैक नहीं
मनमें पछितानै । लोभतें क्षोभतें रोष
हूतें अपकार पराय किये हित जानै ॥
तासु प्रभावतें पीर कराल सुश्रवणनकेढिग
आय सुठानै॥ लखौ निजदास दुखी हरि
दूत बली तुलसी ढिग आय तुलानै॥१६॥

जब श्रवणपीर प्रवेश हुई तब कहे हैं कि लक्षित होता है कि मैंने अन्य पुरुषोंके अपयश सुनकर किंचित् मात्र मनमें पश्चात्ताप नहीं किया । लोभक्षोभ रोष कर पराय नाम दूसरोंके अपकार भी किये उनको अपना हित समझा । इसी प्रभावसे कराल पीरन श्रवणोंके समीप आयकर सुठाने नाम सुंदर स्थान किया है । परन्तु बलवान रामदूत महावीरने

अपने निज दास तुलसीको जब दुःखित देखा तौ समीपमें आयकर तुलाने नाम प्राप्त हुए ॥ १६ ॥

क०—कर्मके प्रभावकी कै कालके सुभाव-
की कै, रोषके प्रभावकी कै विप्र अपमान
की। परनारी नेहकीकै नीच गेह भोगकी
कै,गमनी तु धोखे प्रेरी काहू अनजानकी॥
तुलसी पुकार कहै भाग री निगोडी
पीर, श्रवण समीप देख बाहु बलवानकी।
आन कपिराजकी शपथ सत्य काजकी,
दुहाईहनुमानकी जो रहै पीर कानकी १७॥

जब श्रीमहावीरजीका समीप में आना दर्शित हुआ तौ महानुभावोंका धर्म है कि पहिले अनर्थकारक को समझा देते हैं न मानै तौ शासना देते हैं तिस कारण श्रीगोस्वामी पीर प्रति कहै हैं कि तू कर्मके प्रभावसे है, कै कालके स्वभाव से है, कै रोषके प्रभावसे है, कै विप्रके अपमानसे है। यद्वा परस्त्री स्नेहसे है, कं

नीच गृह में भोग से है, अथवा तूने किसी अज्ञानकी प्रेरणा से धोका खाइकर गमन किया अर्थात् आई । देख मेरे श्रवण समीप बलवान् महावीरकी बाहु है तिसेसे तुलसी पुकार कर कहै हैं कि री निगोडी (जिस के गोडे केहं पांव नहीं अर्थात् पंगु जो पराक्रम हीन) अधम पीर ! तू भाग जा । तुझे कपिराज महावीरजी-की आन, सत्य काज (सत्य संकल्प) की शपथ, हनूमान की दुहाई है जो कानविषें पीर रहै ॥ १७ ॥

स०–क्रूर कुजातिन श्रवणनके ढिग व्याधि
रही मनो रावण रानी । अंजनीनंदनके पग
ध्यावत दूर पराय लजाय डरानी ॥ श्रवनन
शूल न व्यापहि फेरकहों प्रनरोपि सुनो नर
ज्ञानी । मान प्रतीति भजौ तुलसी सहि
नाम भलौ हनुमान सुदानी ॥ १८ ॥

जब श्रवण पीर गई तब कहे हैं कि यह जो क्रूर नाम अज्ञान कुजातिन नाम नीच श्रवण विषे व्याधि रही

मानौ रावणकी रानी (निशाचर पत्नी) थी । अंजनी-नंदन महावीर के चरणोंका स्मरण करते ही लज्जित और भयभीत होकर दूर पराय नाम भाग गई। हे ज्ञानी नर! सुनो मैं प्रण रोपकर कहता हूं कि श्रवण पीर फेर व्याप्त न होगी । प्रतीति नाम विश्वासपूर्वक हे तुलसी ! भलौ नाम सर्वकालिक कल्याणकारी (सही नाम) सत्य नाम वरदायक हनूमानजी का स्मरण करो ॥ १८ ॥

क०—दशनन की व्याधि भई छाया ग्रहणी
समान, भेषजतें घटै ना न डरै काहूआनको।
कहौं वार वार ही पुकार सुनो ज्ञानी
लोग, विनय सुनावो वेगि वीर हनुमानको॥
करेंगे न वार कीशनाथ हैं उदार राम, दूत
भलें जानत हैं रीति प्रीति ध्यान को।
हरेंगे विषम पीर राखके प्रतीति धीर,
तुलसी मनाउहियेकीश बलवानको॥१९॥

अब दशनन नाम दातों विषे पीर हुई जो छाया-

ग्रहणी (सुरसा राक्षसी हनूमानजीको समुद्र उल्लंघन समय मिली रहै) के समान है न तौ भेषज नाम औषधिसे घटै है न किसीसे डरै है। सुनो हे ज्ञानी लोगो ! मैं तौ वारंवार पुकार अपनेको यही कहूं नाम समझाऊं हूं कि वेग ही वीर हनुमानजीको विनय सुनावो। कीशनाथ श्रीहनूमानजी देर नहीं लगावेंगे क्योंकि उदारचित्त हैं, रामदूत हैं, भली प्रकार प्रीति आर ध्यान की रीतिको जानै हैं। प्रथम पुकार कर कहा अब मनको बोध करते हैं कि हे तुलसी ! प्रीति करके धैर्य राखो, कीश बलवान् श्रीमहावीरका हृदयमें ध्यान करो वही इस विषम श्रवणपीरको हरण करेंगे ॥ १९ ॥

पूर्व अघमोटकी है कैधों रोष टोटकी है,
कैधों भई बेड विप्रवंश के दुखाव सों।
भेषज न मानै तू हठीली बडी एते वार,दीन्हें
दुख धोके क्रूर कर्मके प्रभाव सों ॥ तुलसी

पुकार कहेभाग भाग वेग अब नातर कहेंगे
कीश ईश बल भाव सों। मारेंगे पछारि
तोहि लंकिनीसमान जानि, डार देहैं दूर
कहूं लूमके लफाव सों॥ २०॥

पीर को समझावे है कि तू पूर्वकृत नाम संचित अघ नाम पाप के मोट नाम समूहसे है, कै रोषकृत टोटक यंत्र मंत्रादि से है, कै धौं किसी बडे नाम उत्तम ब्रह्मकुल के दुःख देने से हुई। बडी हठीली है औषधिको नहीं मानै, एते वार नाम इतनी देरतक जो दुःख दिया तौ समुझ पडा कि तूने क्रूर कर्मके प्रभावसे धोका खाया अर्थात् तुझे ज्ञान नहीं हुआ कि तुलसीदास श्रीमहावीरजी करके अभिरक्षित है नहीं तौ क्रूर कर्मके प्रेरणासे भी नहीं आती यही धोखा तूने खाया और अभी तक स्थिर है। जब स्वयं तुझे ज्ञान नहीं हुआ तौ अब तुलसी पुकार कर कहै हैं कि वेग ही भाग जा नहीं तौ कीशराय महावीरजी अब तुझे अपने बलके भाव नाम पराक्रमसे ग्रहण करेंगे।

और तुझे लंकिनी (राक्षसी)समान अनुमान कर पछार मारेंगे और लूमके लफाव नाम पुच्छके घुमावसे दूर कहीं डार देंगे ॥ २० ॥

क०—कुलके कपटकी कै रोषके दपटकी कै,
मोहके दपटतें प्रगट भई तू पातकी ।
विप्रमनभंगकी कै वसै नीच संगकी कै,
साधु सों विवाद कीन झूठ हठ बातकी ॥
तुलसी कहत ऐते संभवित रद रोग,
भाग भाग वाणी अब जानी वातजातकी ।
आन हनुमंतकी शपथ बलवंतकी, दुहाई
महावीरकी जो रहै पीर दांत की ॥२१॥

जब पीर नहीं गई तौ फिर समझावें हें कि वंशके कपटसे हैं, कै क्रोध के दपट नाम प्रबल ज्वाल से है, कै मोहके झपट नाम आवेशसे है कि जिससे हे पातकी पापिनी ! तू प्रकट हुई । कै किसी ब्राह्मणके मनभंग नाम अपमानसे है. कै नीचकी संगतिके प्रसंगसे है, कै

साधु जनसे हठ धर्म कर झूठे विवादसे है। तुलसी-दास कहै हैं कि री दांतपीर ! जो पूर्व वर्णित हेतुतें तू संभवित नाम उत्पन्न होय तौ अब यह वाणी वातजात (पवन तें उत्पन्न जो महावीर) की जानि भाग जा। तुझे हनुमंतकी आन, बलवंत की शपथ, महावीरकी दुहाई है जो दांतनविषें पीर रहै ॥ २१ ॥

स०—कान सुनी विनती जनकी तब मारु-
तनंदन कीन निवारा । बाहु विशाल पसार
कृपाकर शील निधानसुजान उदारा ॥
दूर कियौ रदके रुजकों सुख मूरदियौ यश
वेदप्रचारा । शोच विहाय भजौ तुलसी
हिरदें कपिनाथके राम पियारा ॥ २२ ॥

यहां मनोरथ सिद्ध हुआ तिसका वर्णन करें है कि जब मेरी विनती कान सुनी नामकान देकर अर्थात्‌चित्त देकर सुनी तबमारुतनंदनपवनपुत्रश्रीमहावीरजीने दुःख निवारण किया और जो (कान सुनै) ऐसा पाठ होय तौ

यह अर्थ है कि जब सदैव प्रणाली है कि जनकी विनती कान देकर सुनै है तब मारुतनंदनने दुःख निवारण कर दिया । शीलनिधान, सुजान, उदार श्रीहनूमानजीने कृपा करि लम्बी भुजानको पसारि रदरोग नाम दांतपीडासे निवृत्ति कर सुख भूर नाम आनंद दिया तिनके सौशील्यादि गुणोंको वेदवर्णन करै हैं । श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी कहै है कि शोक त्यागि राम पियारा अर्थात् रामप्रिय श्रीहनूमानजी को हृदयसे अर्थात् चित्त लगा कर भजो ॥ २२ ॥

क०–राम कराल कंश भूमिपालके भरोसे,
बकी बक भगनी कहूं कहूंतें न डरैगी ।
बडी विकराल बालघातिनी न जात
कही, बाहु बल बालक छबीले छोटे छरैगी
आई है बनाय वेष आपहु विचारि देख,
पाप जाय सब को गुणीके पाले परैगी ।
पूतना पिशाचनी ज्यों कपिकान्ह तुलसी
की,बाहुपीर महावीर तेरे मारे मरैगी॥२३॥

बाहुपीर प्रवेश वर्णन जिसको पूतनाका रूपक कर कहे हैं—कर्मरूप क्रूर कंश भूमिपाल राजाके भरोसे पर बकी (पूतना) बकासुर राक्षसकी भगनी बहिनी भासित होता है कि कहीं किसीसे अर्थात् अन्य देवतासे नहीं डरैगी। बडी विकराल (भयंकर) है, बालघातिनी है, कुछ कहाहीं नहीं जाता, मेरे बाहु बलरूप छोटे छबीले शोभामयी बालकको छरैगी नाम छलैगी अर्थात् प्राण हरि लेयगी। आप ही विचार देखिये कि यह पीर वेष बनाकर आइ है अर्थात् है तौ भूतकृत बाधा परंतु रोगके बहानेतें आई यही उसका वेष बनाना है, सो हे महाराज! जब गुणी नाम गुणवान अर्थात् आपके पाले नाम वशमें पडैगी तो मेरे पाप छूट जानेमें तौ कुछ संदेह ही नहीं किन्तु जो कोई आपके नामका स्मरण करैगा उन सबका पाप जाय नाम पाप छूटकर आनंद होगा। तुलसीदास कहे हैं कि हे श्रीमहावीर! मेरी बाहुपीर पिशाचिनी पूतना समान

है आप कान्ह कृष्णरूप हौ यह आप ही के मारे मरेगी अन्यसे नहीं ॥ २३ ॥

क०—कालकी करालताकरम कठिनाईकैधौं,
पापके प्रभावकी सुभाय वाय वावरे ।
वेदना कुभांति सो सही न जात रैन दिन,
सोई बाहु गही जो गही समीर डावरे ॥
लायौ तरुतुलसी तिहारो सो निहारि वारि,
सींचिये मलीन भयो तयो तिहुँ तावरे ।
भूतनीके आपने परायेको कृपानिधान,
जानियत सबहीकी रीति रामरावरे ॥२४॥

हे महाराज ! काल की करालता है अर्थात् सुमार्ग सन्मुख होते देखकर कराल कलिकालने क्रोधयुक्त हो-कर व्याधि लगायदी, कै पूर्व कुटिल कर्मकी कठिनाई है, कै वर्तमान जो पाप किये तिनके प्रभावकी स्वाभा-विक बयारि (बावरे) बहि रही है अर्थात् कालकर्म तौ अपने सहजधर्म को करै हैं परंतु यहां प्राणान्तक क्लेश होवै है कि जिसका वर्णन अगिली तुकमें किया ।

(वेदना) पीडा (कुभांति) असह्य कि जो सही नहीं जाती दिन रात्रि हो रही है और उसने वह बांह गही कि जो समीर डावरेनाम पुत्र अर्थात् आपने गही रहै, भाव यह कि जब आप ग्रहण कर चुके तौ फिर उसका ग्रहण करना नहीं संभवे यह आश्चर्य्य है। तुलसीरूप तरु वृक्ष लायो नाम लगायो आप ही कौ है ऐसा निहारि नाम देखकर कृपावारि नाम जल सींचिये नहीं तो मलीन हुआ जाता है क्योंकि वृक्ष एक ही तपन से मुरझाय जावै है तहां त्रैताप दैहिक भौतिक तीन ताप करि संतप्त है। मेरे इस कहनेमें कि यह वृक्ष आप का लगाया है यदि कुछ संदेह होय तौ हे कृपानिधान, हे रामरावरे रामप्रिय! (आपके) सन्मुख (पराये) विमुख जो भूत नाम जीव तिनको आप (नीके) अच्छी प्रकार रीतिपूर्वक जानते हौ, यदि ऐसा पाठ होय कि "भूतन की आपनी पराई हे कृपानिधान! जानियत सब हींकी रीति रामरावरे" तहां यह अर्थ है कि भूतन की अथवा अपने कर्मनकी अथवा किसी दूसरे शत्रुकी लगाई

व्याधि है हे रामप्रिय ! आप सबकी रीति जानौ कि कहांसे यह प्रेरणा है जैसा कुछ होय दूर कीजिये ॥२४॥

क०—भालकी कै कालकी कै रोषकी त्रिदोषकी
कै, वेदना विषम पाप ताप छल छांहकी ।
कालकूटकै, मंत्रकी यंत्र मंत्र मूठकी कै, परा-
यजाय पायनी मलीन मन माहकी ॥ पप है
सजाय न तौ कहत बजाय तोहि, बावरी न
होयवाणी जान कपिनाहकी । आन हनुमा-
नकी शपथ बलवानकि, दुहाई कपिनाहकी
जो रहै पीर बांहकी ॥ २६ ॥

हे महाराज ! समझ नहीं पडै कि भाल नाम प्रारब्धसे है, कै काल नाम कलियुगके प्रभावसे है, कै किसी भूतादिके रोष नाम क्रोधसे है, कै त्रिदोष अर्थात् कफ पित्त वात तीनहूके कोपसे है, कै पापके संताप नाम दाहसे है, अथवा छलरूपी पिशाचकी छांह नाम प्रतिबिंबसे है, जो विषम नाम असह्य वेदना नाम

पीडा हो रही है। कै काल मंत्र कूटकी अर्थात् काल नाम कलियुगी कूटकी नाम पाखंडी मंत्रसे है, कै मूठकी यंत्र मंत्रसे है, री मलिनमन पापनी ! तू अब भाग जा, नहीं तौ दंड सज़ा पावैगी, मैं तुझसे पुकारके कहता हूं बावरी मत हो, यह वाणी कपिनाह श्रीमहावीरजी-की जान। श्रीहनूमानजीकी आन है, श्रीबलवान्‌जी-की शपथ है, श्रीकपिनाहकी दुहाई है जो बाँहविषे पीर रहै॥ २५॥

आपने पाप त्रैताप कैधों आपहूतें; बाढी
बाहुवेदनाकही न सही जात है। औषधि
अनेक यंत्र मंत्र टोटकादि किये, वाद भये
देवता मनाये अधिकात है॥ करतार भर-
तार हरतार कर्म काल, कौ है जग जाल
जो न मानै इतरात है। चेरो तेरो तुलसी तू
मेरो कहो राम दूत, ढील तेरी वीर मेरी
पीरसी पिरात है॥ २६॥

अपने पाप नाम पूर्वकृत दुष्कर्मसे है, कै त्रैताप नाम दैहिक,दैविक,भौतिककी प्रचंड दाहसे है,कै किसी श्रापसे यह बाहुवेदना प्रबल हुई कि जो कही नहीं जाती न सही जाती। अनेक औषधि और यंत्र मंत्र टोटकादि किये परंतु सब वादि भये नाम व्यर्थ भये अर्थात् निष्फल गये और देवतादिकके मनाये अधिक बढै है काहे विधि, हरि, हर कृत कर्म काल अनुसार यह जग जाल है, जब जिसका समय आवै है तभी जावै है यह समझकर न मानै नाम दूर नहीं होवै है किन्तु इतरात अर्थात् इठलात है आनि नहीं मानै है। जब कि रोग कुछ और अरु औषधि कुछ और, तौ रोग कैसे जावै है, हां; एक परम औषधि विशेष है कि जब मैं तुम्हारौ चेरौ हौं तौ हे रामदूत ! आप यह कहि देवो कि तुलसी तू मेरौ है और हे वीर ! जबलग यह तेरी ढील है तभीतक मेरी बाँहपीर है यहां सर्वोत्कृष्ट पराक्रम महावीरजीका सूचित किया । यद्वा हे महाराज !

मेरे करतार भरतार हरतार आप ही हौ यह तौ कर्म काल कौ जगजाल है कि जो यह पीर इतराइ रही है नाम हठ कर रही है । तिससे प्रार्थना है कि जब तुलसी तेरौ चेरौ नाम सेवक है तौ आप कहि देवो कि तू मेरौ है, यावत् आप की ढील है तावत् मेरी पीर है । यद्वा—करतार हरतार, भरतार, कर्म कालकृत जग-जाल है कि जो मुझे कर्म फल दै रहो है इनमेंसे ऐसा को जो न मानै और इतरावै नाम हठ धर्म करै । क्योंकि तुलसी तुम्हारौ चेरौ है और आप भी कहौ हौ कि तू मेरौ है तौ हे रामदूत ! आपकी ढील ही मुझे पीर सदृश दुःख दे रही है । यदि 'इतरातके' स्थान में 'इतात' पाठ होय तो जानना चाहिये कि इतात फारसी शब्द है शुद्ध पद इताअत है नाम ताबेदारी कबूल करना अर्थात् आज्ञा स्वीकार करना । तहां यह अर्थ है कि देवतादिके मनानेसे तौ अधिकतर होती है । रहे त्रिदेव विधि, हरि, हर जो देवाधिदेव हैं

सो उनको भी स्मरण किये परंतु ब्रह्मादिक अपनी कर्तव्यता कर चुके अब उसको भेंट नहीं कर सकते हैं, भासित होता है कि यह जगजाल कर्मकालकृत है अर्थात् नियमानुसार फलाफलको समय समय देवे है तिससे हमारी रक्षा करनेका वह भी असमर्थ हैं और आप सर्वशक्तिमान् सर्वेश्वर षड्गुण सम्पन्न कौशलेन्द्र महाराजाधिराज अयोध्याधिपति जो श्रीरामचंद्र (कैसे हैं श्रीरामचंद्र यथा रामायणे-"जगपेखन तुम देखन-हारे विधि हरि शम्भु नचावनहारे। तेउ नाहिं जानहिं भेद तुम्हारा, अपर तुम्हैं को जाननिहारा ") तिनके प्रिय दास हौं तौ प्रार्थना है कि हे वीर ! इतना कहि देवो कि तू मेरौ है, इसके सिवाय और कांक्षा नहीं, यावत् इसमें ढील है तावत् बाहुमें पीर है ॥ २६ ॥

सिंहिका संहारी बलि सुरसासुधारी छल,लंकिनी पछारी भारी वाटिका उजारी है। लंका पुरी जारी फेर मकरी विदारी तुम, वार वारयातुधान

धूरकर डारी है ॥ तोरि यम कातर मंदोदरीक-
ढोर आनी, रावणकी राणी मेघनाद महतारी
है । भीर बाहपीरकी निपट राखी महावीर,
कवनसकोचतुलसीके शोच भारी है ॥ २७ ॥

फेर ऐश्वर्य वर्णन करै हैं. आपने सिंधु मध्यमें
छाया गहनेवाली सिंहिका राक्षसीको संहारी, बलि जाऊं
सुरसा राक्षसीको सुधारी अर्थात् जो आपकी बुद्धि बल
देखनेकी तर्कना किये रही सो मिटाय दी, छल करि
लंकिनीको पछारी, भारी वाटिका उजारी । रावण
के देखते लंका पुरी जारी, फेर कालनेमिके निकट
तालमें मकरी विदारी नाम मारी, यातुधान राक्षसोंकी
सेनाको वारम्वार धूरमें मिला दी । यमकातर अर्थात्
रावणके मंदिरके द्वारमें जहां पुष्ट कपाट लगे रहैं तिनको
तोरि भीतर प्रवेश करि मंदोदरीको कढोर लाये जिसे
जगत् जानै है कि रावण प्रतापी शूरवीरकी रानी और
मेघनाद अजित बली बीरकी महतारी है ऐसा तौ आ-

पका पराक्रम है, परंतु हे महावीर ! बाहु नाम भुजाकी जो निपट कहे अत्यन्त भीर नाम असह्य भारी जो पीर सो विद्यमान राखी, ऐसा कौन संकोच आपने धारण किया है अर्थात् किसका दबाव आपको है?इसका मुझे बडा ही शोच नाम संताप हो रहा है ॥ २७ ॥

तेरौबालकेलि वीर सुन सहमतधीर, रहै न शरीरसुधि शक्र रवि राहुकी। तेरी बाहु वसत विशोक लोकपाल सब, तेरौ नाम लिये रहै आरति न काहुकी॥ साम दाम भेद विधि वेदहू लवेद सिद्धि, हाथ कपि-नाथहू के चोटी चोर साहु की । आलस अनख परिहास कौ सिखाव यहै एतेदिन रहीपीर तुलसीके बाहुकी ॥ २८ ॥

हे वीर ! आपका बालकेलि नाम बालचरित्र सुन-कर धैर्यवान् सहमति नाम भयभीत होते हैं और (शक्र) इंद्र, (रवि) सूर्य,राहुको भी शरीर सुधि नाम देहाध्यास न

रहा (इतिहास विख्यात)। जबसे सपरिवार रावणका नाश कराय सबको अभय किया तबसे तुम्हारे बाहुबलसे समस्त लोकपाल विशोक नाम आनंदपूर्वक बसे हैं, जन जो आपके नामका स्मरण करै हैं उनको किसीसे आर्ति नाम कष्ट नहीं पहुचे है । (साम) दोनहू ओरसे प्रीतिपूर्वक मिलि रहना, (दाम) कुछ देकर मिलि रहना (भेद)किसी बंधु आदिको फोरि मिलायलेना और (खेद) दण्ड इत्यादि यह चार हूं राजनीतिकी विधि हैं तथा वेद-हूके धर्मकी विधि इन सबकी सिद्धि और चोर साहु अर्थात् दुःख-सुख-प्रदायक जीवोंकी चोटी। है हे कपि-नाथ ! सब आपके हाथमें है। आपका ऐसा पुरुषार्थ होने पर भी तुलसीकी बाहुविषे इतने दिन पीर स्थित रही तौ क्या आपके आलसका कारण है, कै अनख नाम क्रोधका धर्म है, कै परिहास अर्थात् जग उपहास करानेका मनोरथ है कि अमुक सामर्थ्यवालेके दासकी अमुक दशा,अथवा इसी बहाने सिखावन देते हौ॥२८॥

टूकनकी घर घर डोलत कंगाल बाल, ज्यों
कृपाल मोहिं नाथ नातौ पाल पोसौ है ।
करी है सम्हार सब अंजनीकुमारसो न,
आपनो बिसार है यो मेरेई भरोसो है ॥
इतनौ परेखौ सब भांति समरथ्य आज,
कपिराज सांची कहौं को त्रिलोक तोसौ है ।
शासति सहत दास न कीजिये परिहास,
चेरेकौ मरन खेल बालकन कैसौ है ॥२९॥

पूर्व ही पुरुष वचन कहे तिससे अब मनावे हैं कि मैं कंगाल बालककी नाईं टुकडनके अर्थ घर२ फिरता रहा, यहां अतिशय हीनत्व अपना जनाया कि एक तौ कंगाल तिस पर बालक, यदि युवावस्था होय तौ उपाय भी कर सकै, बाल्यावस्था पुरुषार्थरहित है, भाव यह कि जब मैं आपका दास नहीं रहा तब व्यर्थ वासना मृगतृष्णारूपके निमित्त यहां वहां भटकता रहा, सो हे कृपालु नाथ ! आपने नातौ पाल-

कर अर्थात् जीवका सम्बन्ध स्वामीसे जानकर पालन पोषण किया अर्थात् व्यर्थ वासनासे मन खींच अपनी ओर सन्मुख कर लिया। हे अंजनीकुमार! सर्व सम्हार आपने की हैं तिससे मुझे निश्चय है कि आप अपने दासको कदापि विस्मरण नहीं करेंगे। परंतु इतना परेखौ नाम उलहना है कि आप सब प्रकार समर्थ हैं, हे कपिराज श्रीमहावीरजी ! सत्य कहता हूं कि आज तुम सदृश त्रैलोक्यमें कोई नहीं है तौ शासति सहत नाम क्लेश युक्त दासका अब परिहास न कीजिये, काहे कि मेरा मरना बालकोंकेसा खेल हुआ जाता है अर्थात् बालकोंको विचाराविचार नहीं फिर बनाया फिर मिटाया ता सदृश मेरा मरण न होय, यदि होय तौ विचारयुक्त; नहीं तौ परिहास है। यहां बालकोंके खेलमें एकदेशीय दृष्टान्त है केवल विचाराविचारसे प्रयोजन है और कोई समता नहीं। और जो 'चेरे' के स्थान में 'चीरी' पाठ होय तौ

भी प्रमाण है, चींरी नाम चिड़िया, अर्थ स्पष्ट है ॥ २९ ॥

लोक परलोक कौ त्रिलोक न विलोकि
यतु, तोसों समरथ्य चषचार हूं निहारिये।
कर्मकाल लोकपाल अग जग जीव जाल,
नाथ हाथ सब निज महिमा विचारिये ॥
खास दास रावरौ निवास तेरौ तासु उर,
तुलसीको देव दुखी देखियतु भारिये ।
बाहु तरुमूल बाहुशूल कपि कच्छु वेलि,
उपजी सकेलिकपि केलिहीउखारिये ॥३०॥

(लोक परलोककौ) लोक परलोक हित के लिये चार हूं (चष) अपभ्रंश चक्षु नाम नेत्रों करिके देखिये तौ त्रैलोक्य में आप समान कोई समर्थ दृष्टिमें नहीं आवै है । (कर्म) संचित, प्रारब्ध,क्रियमाण; (काल), लग्न, मुहूर्त, तिथि, वार, नक्षत्र, योग करण, पक्ष, मासादि; (लोकपाल) इन्द्रादि (अग) स्थावर (जग) जंगम जीवोंका जाल नाम समूह हे नाथ !

सब आप के हाथमें है, भाव सबको बनाय बिगारि सकते हौ, इस निज महिमाको विचारिये । तिसपर आपका यह (खास) निज दास कि जिसके हृदयमें आपका निवास है, अहो देव कि अब भी तुलसीको अतिक्रम कष्टित देखिये । बाहुरूप वृक्षकी मूलसे बाहु-शूल रूप कपिकच्छु वेलि (जंगलमें एक वेलि होती है जिसको खहरा और करेच भी कहते हैं; देहमें लगनेसे खुजलाहट उत्पन्न होती है अत एव जहां वानरोंका वास हौवै है वह शीघ्र उसको वहांसे निर्मूल कर देते हैं उसका नाम कपिकच्छु वेलि है। यथा—"ऋषिप्रोक्ता शूकशिवः कपिकच्छुश्च मर्कटी" इत्यमरः । उत्पन्न हुई ताको सकेलि नाम बटोरि कर कपि खेल ही नाम वानरस्वभावतें लीलामात्र ही उखार डारिये काहे कि मेरे तनमें आपका निवास है तहां बाहुरूप वृक्षकी मूलमें बाहु शूलरूप कपिकच्छु वेलि नहीं सम्भवै है, अतएव बाहुपीर शीघ्र ही दूर कीजिये

देर करनेसे आपके वासमें भी बाधा है । यहां तीन प्रयोजन सिद्ध हुए, एक तो आपका खेलना, दूसरे आपके वासमें बाधा न होना और तीसरे हमारा कष्टसे रहित हो जाना ॥ ३० ॥

रामको सनेह राम साहस लखन सिय,राम-
जूकी भक्ति शोक संकट निवारिये । मुद
मर्कट रोगवारिनिधि हेर हारे,जीव जाम-
वंतके भरोसौ तेरौ भारिये॥कूदिये कृपालु
तुलसीके प्रेम पर्व्वततै,सुथल सुवेल भाल
बैठके विचारिये । महावीर बांकुरे वराकी
बाहुपीर क्यों न, लंकिनी ज्यों लात घात
ही मरोरि मारिये॥ ३१ ॥

इस छंदमें जीव अरु जामवंतका रूपक वर्णन है। तुलसीदासजी श्रीहनूमानजी प्रति निवेदन करै हैं कि हे बांकुरे महावीर ! मेरे अन्तरमें श्रीरामचंद्रके चरणार-विंदोंमें जो स्नेह सोई श्रीरामचंद्र हैं, और श्रीरामचं-

इके सेवा धर्म कार्योंमें जो साहस सोई लक्ष्मणजी है, और श्रीरामचंद्रजीकी जो भक्ति सोई सीताजी हैं और मेरो मुद जो मानसी आनंद सोई मर्कट है, रोगरूप समुद्र है, ताहि देखि आनंदको विकलता भई, अब जीवरूप जामवंतको स्नेहरूप श्रीराम,साहसरूप लक्ष्मण, भक्तिरूप सीता, आनंदरूप मर्कटके शोक संकट निवृत्त करनेके लिये एक आपका ही दृढ भरोसा है । तातें प्रार्थना है कि हे कृपालु ! तुलसीके प्रेमरूपी पर्वतपरसे (चढि गिरि शिखर चहूं दिशि देखी) कूदिये और मेरे अंतरमें जो सुमति सोई सुथल सुवेल पर्वत, ताके भाल नाम माथे पर विराजकरि और विचार करि । हे बांकुरे महावीर ! मेरी इस वराकी नाम तुच्छ बाहुपीररूप लंकिनी राक्षसीको लातघात नाम चरण-प्रहारसे मरोरि मारिये नाम दूर कीजिये ॥ ३१ ॥

देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग, छोटे
बडे जीव जेते चेतन अचेत हैं । पूतना

पिशाची यातुधान यातुधान बाम, रामदूत
की रजाय माथे मान लेत हैं ॥ घोर यन्त्र
मन्त्र कूट कपट कुयोग रोग,हनुमान आन
सुनि छांडत निकेत हैं। क्रोध कीजे
कर्मको प्रबोध कीजे तुलसीको, शोध कीजे
तिनको जो दोष दुख देत हैं ॥ ३२ ॥

(देवी) काली, चामुंडा, योगिनी आदि; (देव) इन्द्र यम, अग्नि, सूर्यादि; (दनुज) दैत्यादि;(मनुज) मनुष्यादि; (मुनि) भृगु, दुर्वासादि; (सिद्ध) याज्ञवल्क्यादि; (नाग) अनंत, तक्षक, वासुकी आदि और और भी संसारविषे जितने चैतन्य, अचैतन्य, छोटे, बडे जीव हैं तथा (पूतना) बालग्रह, (पिशाची) मांस खानेवाली तुच्छ देवी, (यातुधान) राक्षस, (यातुधानवाम) राक्षसी ये सब रामदूतकी आज्ञा स्वीकार करै हैं । तथा मारण, मोहन, उच्चाटनादि जो घोर यंत्र मंत्र (कूट कपट) जादू टोना करिके जो कपट और

कुयोग रोग श्रीहनूमानजीकी आन सुनकर निकेत नाम स्थान छोड देते हैं। ऐसा प्रताप स्मरण करि मेरे कर्मोंको क्रोध करिये और जे दोष कर्म मुझे दुःखदायक हैं तिनको शोध नाम खोज करि तुलसीको प्रबोध अर्थात् रोगनाश करि निरुज कीजे ॥ ३२ ॥

तेरे बल वानर जिताये रण रावणसों, तेरे घाले यातुधान भये घर घरके। तेरे बल राम काज किये सब सुरकाज, सकल समाज साज साजे रघुवरके॥ तेरे गुण गान सुनि गीर्वाण पुलकित, सजल विलोचन विरंचि हरि हरके। तुलसीकी बाहु पर हाथ फेरि कपिनाथ, बूझिये न दास दुखी तोसे कहु हरिके॥ ३३ ॥

तुम्हारे ही बलसे श्रीरामचंद्र स्वामीने वानरोंको रणविषें रावणसे जिताया। भाव यह कि आगे तौ राक्षसोंको आप जीतते गये पीछे सब वानर जय

पाते गये, और तुम्हारे ही घाले नाम मारे हुए यातुधान भये घरघरके नाम स्थान भंग हो गये, यद्वा जे घायल रहे सो तौ भागकर घरमें हो रहे और जे मारे गये ते मुक्तिघरमें प्राप्त हुए। तुम्हारे ही बल करके रामने राज्य और सब देवकार्य किये, समस्त समाज साज रघुवरके तुम्हारे ही साजे नाम बनाये गये हैं यथा-सुग्रीवको मिलना, सिंधु लांधि जानकीजीकी सुधि लाना, लंकासे सुखेनको लाना, जानकीजीको मिलाना इत्यादि। तुम्हारे (गुणगान) तेज, बल, प्रताप, साहस, धैर्य, वीरता, स्वामी सेवकाई इत्यादि गुणोंकी प्रशंसा सुनि देवता हर्षित और ब्रह्मा विष्णु महेशके नेत्र पुलकावलीसे सजल हो रहे हैं। हे कपिनाथ! तुलसीकी बाहुपर हाथ फेरिये (तोसे कहूं हरिके) त्वत्सदृश हरिदा-सके दास कहीं (बूझिये न दुखी) दुखी सुने नहीं गये। और जो हरि शब्दका अर्थ सिंह यद्वा वानर

ग्रहण किया जावे तौ भी प्रमाण है । विदित होय कि तीसरी तुकके अंतमें 'हर' और इस तुकमें 'हरि' लिखा सो पदमैत्रीमें कोई विरोध नहीं । और जो ऐसा पाठ होय कि " बूझिये न दास दुखी तोसे कनिगरके " तौ तहां यह अर्थ है कि आप सारिखे कनिगर नाम कानि माननेहारे स्वामीके दासको किसी भाँति दुःख न होना चाहिये ॥ ३३ ॥

पाल्यौ तेरे टूकनकौ परचो चूक मूकिये न,
कूर कौडि दोकौ हो अपनी ओर हेरिये ।
भोरानाथ मो पर सरोष होत थोरे दोष,
पोष तोष थापी आपनौ न अवडेरिये ॥
अंबु तू हौं अंबुचर अंब तू हौं डिंभ सो
न, बूझिये विलम्ब अवलम्ब मेरे तेरिये ।
बालक विकल जानि कीजे प्रेम पहिचान,
तुलसीकी बाहु पर लामी लूम फेरिये॥३४॥

पाल्यौ तेरे टूकनको प्रथम ही से तुम्हारे द्वारा

पालन हुआ तौ (परे हू चूक मूक़िये न) अपराध होनेपर भी मूकिय नाम छोडिये नहीं, मेरी पूछिये तौ मैं कूर नाम अज्ञान दो कौडीका मनुष्य हूं परंतु आप अपनी ओर देखिये । हे भोरानाथ ! थोरे ही दोषपर सरोष नाम क्रोधयुक्त होते हौ, जब अपना करिके पालन, पोषण, स्थापन किया तौ न अवडेरिये नाम कलंक न लगाइये । तुम अंबु नाम जल हौ, मैं अंबुचर नाम मीन सदृश हों । तुम रक्षाके हेतु अंब नाम मातृवत् हौ, मैं डिंभ नाम बालक समान हौं तिस से विलंब न कीजिये, मेरे अवलम्ब नाम आधार तुम ही हौ। बालक अर्थात् मुझको विकल जानि प्रेमकी पहिचान कीजिये, तुलसीकी बाहुपर लम्बी लूम नाम पुच्छ फेरिये ॥ ३४ ॥

उथपे थपन थिर थपे उथपन हार, केशरी कुमार बल आपनो सँभारिये । रामके गुलामनिके कामतरु रामदूत, मोसे दीन

दूबरेको तकिया तिहारिये ॥ साहब समर्थ
आज तुलसीके माथेपर, सोउ अपराध विन
वीर बांधि मारिये । पोधर विशाल बाहु
बलि वारिचरपीर, मकरी ज्यों पकरिके
वदन विदारिये ॥ ३९ ॥

उथपे नाम उखडे हुए अर्थात् जिनका ऐश्वर्य भंग हो गया, यथा-सुग्रीव बिभीषणादि, तिनको थापन नाम स्थापित करनेवाले, (थिर थपे) जो दृढ करिके स्थापित, यथा वालि रावणादि, तिनके उथपनहार नाम उखाडनेवाले हौ, हे केशरीकुमार श्रीहनूमानजी ! अपना बल सम्हारिये नाम स्मरण करिये, भाव-भूले बलकी सुधि कीजिये । हे रामदूत ! रामदासोंके कल्पवृक्ष ! मत्सदृश दीन दुर्बल पुरुषोंको तकिया नाम आधार तुम्हारोई है । तुम समान समर्थ साहब तुलसीके माथे पर रक्षा करनेहारे वर्त्तमान, तिस पर विना अपराध बांधकर मारा जाना है

वीर ! आश्चर्यकारक है । (पोधर विशाल बाहु) मेरी बाहु सोई विशाल नाम बडा भारी (पोधर) अपभ्रंश पयोधरका नाम समुद्र है तामें बल सोई वारि नाम जल है, पीर सोई वारिचर मकरी है जैसे आपने वहां मकरीको मारा तैसे ही बाहुकी पीर-रूप मकरीको पकारि वदन विदारिये नाम मुख-भंजन कीजिये कहीं ' पोधर ' के स्थानमें ' पोखरी ' भी पाठ है, पोखरी नाम तलाई अभिप्राय दोनोंका एक है ॥ ३५ ॥

स०–अक्ष विमर्दन कानन भान दशानन
आनन भाननि हारो । वारिदनाद
अकंपन कुंभकरन्न सुकुंजर केहरिवारो ॥
रामप्रताप हुताशन कौ छबि पक्ष समीर
समीरदुलारो । पापतें श्रापतें तापतिहूंतें
सदा तुलसी कह्ह सो रखवारो ॥ ३६ ॥

अक्ष जो रावणका पुत्र अक्षयकुमार ताके विशेष

मर्दन करता (दशानन) दश हैं आनन नाम मुख जाके ऐसो रावण ताके कानन नाम बगीचा मान नाम अभिमान, आनन नाम मुखके भाननि हारे नाम भंग करता । वारिदनाद जो मेघनाद, अकंपन, कुंभकर्ण सोई (सुकुंजर) प्रबल हस्ती तिनके नाश करनेको केहरिवारौ नाम युवा सिंह समान श्रीरामचंद्रजीका जो प्रताप सोई हुताशन नाम अग्निरूप है, जिसकी छवि नाम दीप्ति समीर नाम पवनकी पक्ष नाम सहायतासे होवै है, सो सहायतारूप समीर दुलारौ अर्थात् आप हौ। यदि ऐसा पाठ होय कि—" राम प्रताप हुताशन कच्छ विपच्छ समीरसमीरदुलारौ।" तहां यह अर्थ है कि रामप्रताप सोई अग्नि है और (कच्छ) जो वनमें एक वृक्ष होता है यथा—"कुणिः कच्छः कांतलको नंदिवृक्षोऽथ राक्षसी" इत्यमरः । " वह गीला ही जल जाता है ता सदृश (विपच्छ) अर्थात् विपक्ष नाम शत्रु भये तिन्हके भस्म करनेके हेतु समीर दुलारौ

जो पवनकुमार सो समीर नाम पवन है कि जिस पवनके विना अग्नि प्रज्वलित नहीं होती, भाव यह कि श्रीहनूमानजीकी सहायता श्रीरामजूके प्रतापके प्रगट होनेका कारण है । ऐसे जो श्रीहनूमानजी सो तुलसीके सदैव रक्षक हैं; किस प्रकारसे कि पूर्वकृत पाप लगने नहीं देते, वर्तमान होने नहीं देते, पुनः देवादिके कोपतें जो आप और दैहिक दैविक भौतिक जो त्रैताप तिनमें रक्षा करै हैं ॥ ३६ ॥

राम गुलाम हितू हनुमान गोसाइँ सुसाइँ
सदा अनुकूलौ।पाल्यौ है आखर बालकसों
पितु मातु ज्यों मंगल मोद समूलौ ॥
बाहुकी वेदन बाहुपगार पुकारत आरत
आनँद भूलौ । श्रीरघुवीर निवारिये
पीररहो दरबार परौ रटि लूलौ ॥३७॥

अब श्रीमहावीरके स्वामी जो श्रीरामजू तिन्ह प्रति विनती करै हैं कि श्रीहनूमान गोसांई जो रामजूके गुला-

मोंके हितकारी तिनके आप सुसांई नाम सुंदर स्वामी हौ सो सदा अनुकूल रहौ। आपके नामके दो अक्षर रकार मकार तिनने माता पिता समान मुझे बालककी नांई आनंदपूर्वक पालन किया। परंतु बाहुविषे जो वेदन नाम पीडा तेहि करिके आरत नाम क्लेशयुक्त बाहु पगार नाम बाहु पसार कर पुकारो हों, काहे कि पूर्व कथित आनंदको भूल गया। 'बाहु पगार' कहनेका भाव यह कि जब तक कष्ट सहने योग्य रहा प्रगट नहीं कहा, जब असह्य हो गया और आनंद कि जिससे अष्ट प्रहर राम-नाम स्मरण होता रहा भूल गया तब बाहु पसार कर प्रसिद्ध कहना पडा। यहां क्लेशकी अधिकता सूचित किया। सो हे श्रीरघुवीरजी ! इस पीरको निवारण करिये,मैं तौ आपके दरबारमें पंगुवत् पडा आपको ही रटन कर रहा हूँ। 'पंगु' कहनेका यह भाव कि जिसके पांव होवे हैं सो चल फिरकर उपाय भी कर सकता है मैं पंगुवत् अर्थात् पुरुषार्थरहित, सर्वोपाय-

शून्य आपके दरबारमें पडा आपको ही स्मरण करौ हौं, चाहै सुधरै चाहै बिगरै। "बनै तौ रघुबरसे बनै, कै बिगरै भरपूरि। तुलसी बनै जो औरतें, ता बनिबेमें धूरि" ॥ ३७ ॥

क०—हनूमान है कृपाल लाडिले लषणलाल, भावते भरत कीजै सेवक-सहाय जू। विनती करत दीन दूबरोदयावनो सो, बिगरे ते आप ही सुधार लीजै भाय जू ॥ मेरी साहिबिनी सदा शीशपर विलसति, देवि क्यों न दासको देखाइयत पांय जू। खीझहू में रीझकी बाणि राम रीझत है, रीझे ह्वैहैं रामकी दुहाई रघुराय जू ॥ ३८ ॥

पूर्ववर्णित विनती जो श्रीरामचंद्र प्रतिकी गई ताके सम्हालनेके अर्थ सबसे प्रार्थना करै हैं कि हे श्रीहनूमानजी! हे लाडले लषण लाल! हे भावते शत्रुहनजी! हे भरतजी! कृपालु होकर सेवककी सहायता कीजिये,

क्या सहायता कीजै सो आगे कहै हैं । दूबरो दीन नाम अतिशय दीन दयावनो दया योग तुलसीसे विनती करनेमें जो भाव बिगरे होयँ तिनको आप सुधार लीजै । मेरी साहिबिनी स्वामिनी हे श्रीजानकीजी ! तुम प्रीतिभावतें श्रीरघुनाथजी जो पतिव्रतनायक हैं तिन्हके शीशपर विलसत है भाव जीवनघन हौ कि जैसा अगस्त्यसंहितामें श्रीमुख वचन शिवजीसे कहे हैं—"आह्लादिनीं परां शक्तिं स्तुयाः सात्वतसंमताम् । तदाराध्यस्तदा रामस्तदाधीनस्तया विना ॥ तिष्ठामि न क्षणं शंभो जीवनं परमं मम " सो हे देवि ! दासको क्यों नहीं पांय नाम चरण दिखाइयत हौ,भाव यह कि जो कृपा करि आप दरश देहौ तौ श्रीरघुनाथजी आप ही प्रसन्न होकर दरश देवेंगे । यद्वा जिसका दास (तुलसीदास) मैं कहावत हौं सो मेरी साहिबिनी श्रीतुलसी प्रभुके शीश पर सदा विलसत । सो हे देवि ! दासको पायँ क्यों नहीं दिखाइत पुनः

पूर्ववत्। कदाचित् कहिये कि रघुनाथजी प्रसन्न नहीं होयँगे तिस पर कहै हैं कि उनका स्वभाव रीझनेका है तातें खीझत हूं राम रीझत हैं अर्थात् जिसपर क्रोध भी करैं उसको परम गति देवै हैं, श्रीरघुनाथजीकी दुहाई है, आप संदेह मत करौ श्रीरघुनाथजी अवश्य रीझे होयँगे ॥ ३८ ॥

मनको अगम तनु सुगम किये कपीश,
काज महाराजके समाज साज साजेहैं।
देव बंदीछोर रणरोर केशरी किशोर, युग
युग जग तेरे विरद विराजे हैं॥ वीरवर
जोर घट जोर तुलसीकी ओर, सुनि सकु-
चाने साधु खलगण गाजे हैं। बिगरी
संवारि अंजनीकुमार कीजे, मोहि जैसे
होत आये हनूमानके निवाजे हैं॥ ३९ ॥

अब श्रीमहावीरजीको मनावै हैं। हे कपीश! ऐसे कार्यकी, जो मनको अगम नाम प्राप्त होने योग्य

नहीं रहे ते आपने तनुतें सुगम लीलामात्र करि डारे अर्थात् समुद्र लांघना, लंका जलाना, इत्यादि और महाराजके समाजके समस्त साज आपने साजे नाम बनाये अर्थात् सुग्रीवसे मित्रता कराय सहायता कराना, समुद्र लांघि लंकासे सीताजूकी सुधि लाना, फेर सैना साजि, समुद्र सेतु बांधि, लंकामें जाय अनेक भांतिसे युद्ध करि लक्ष्मणजीको जिवाय, सकुटुंब रावणका नाश कराय, बिभीषणको राज्य दिवाय, जानकीजीको मिलाये, पुष्पक साजि प्रथम ही भरतादिको अयोध्यामें खबर सुनाये और राज्याभिषेकमें परिपूर्ण समाज साजे । हे रणरोर ! युद्धविषे अति कठिन, केशरी जो वानर तिहिके पुत्र, देवनके बन्दी नाम बंधनसे छुडावनेवाले, युगानुयुग विरद आपके जगतविख्यात हैं, परंतु तुलसीकी ओर बीरघर जोरको घट जोर सुनि साधु जन सकुचाने काहे कि असम्भवित बात है और खलगण गाजे

नाम आनंदित हुए कि अब अच्छी घात है मनभावत साधुओंको दंड देंगे । हे अंजनीकुमार ! बिगरी सँवारी मुझे ऐसा कीजिये कि जैसे हनूमानके निवाजे नाम कृपापात्र सदा से चले आये ॥ ३९ ॥

घेर लियौ रोगनि कुयोगनि कुलोगनि
ज्यों, वासर सजल घन घटा धुक धाई है।
बरषत बारि पीर जारेउ जवास ज्यों स-,
रोष बिन दोष धूम मूल मलिनाई है ॥
करुनानिधान हनुमान महा बलवान,हेरि
हँसि हांकि फूल फूक ज्यों उडाई है ।
खायौ हुतौ तुलसी कुरोग रांड राकसिनि,
केशरीकिशोर वीर राखौबरिआई है ॥४०॥

रोगों, कुयोगों, कुलोगों नाम दुर्जनोंने ऐसा मुझे घेर लिया कि जैसे वासर नाम प्रातःकालमें जलयुक्त मेघकी घटा धुक–धाई नाम घेर लेती है । जिसने पीर रूप वारि नाम जल बरसाय करि जवास सदृश क्रोध

युक्त बिना अपराध ही जलाया तौ देखिये कि धूम-मूल नाम धुवां है मूल जिसका अर्थात् मेघकी जैसी मलिनाई नाम क्रूर कर्तव्यता है, वहां मेघनके जलकरि जवासा जल जावै है यहां बाहु आदि सर्वांग पीर सोई जल है तेहि करिके मैं जवास समान जला जाऊं हूं। यद्यपि कोई अपराध नहीं रहा तथापि जलावै हैं, यही उनकी क्रूर कर्तव्यता है। 'धूम मूल मलिनाई' कहनेका यह भाव कि मेघ धुवां करिके बनै है और धुवां अग्निसे निकलै है,याहीसें मेघको 'धूम-मूल' कहा और फिर अग्निको बुझावै है तौ देखिये कि जहांसे उत्पन्न हुआ उसीको नष्ट करै है यही उसकी मलिनाई है अर्थात् यह पीर मेरे ही शरीरसे उत्पन्न हुई और मुझको ही दुःख दे रही है। परंतु करुणानिधान हनूमान महाबलवानने हेरि नाम यह दशा देखि हास्य-पूर्वक हांककर ऐसे उडाय दी कि जैसे फूँकसे फूल उड जावे है।नहीं तौ कुरोग रूप रांड राक्षसियोंने खाही लिया

होता, वीर केशरी किशोरने बरिआई नाम अपने बल करिके राख लिया। यहां कोई यह तर्कना करै कि जब राख लिया अर्थात् महाराजके बलकरि अभिरक्षित हुआ तौ कष्ट नहीं चाहिये? तहां तात्पर्य यह कि प्राण बचा लिये यहीधन्यवाद है,नहीं तौ विनती करनेका सावकाश भी कहां था ॥ ४० ॥

चेरौ रामरायकौ सुयश सुनि तेरौ हर,
पाय तर आय रह्यों सुरसरितीर हौं। वाम-
देव रामकौ सुभाव शील जानियत, नातो
नेह जानियत रघुवीर भीरहौं ॥ अधि-
भूत वेदनविषमहोतभूतनाथ,तुलसी विकल
पाहि पचत कुपीर हौं। मारियेतौ अना-
यास काशीवास खास फल, ज्याइये तौ
कृपा करि निरुज शरीर हौं ॥ ४१ ॥

श्रीमहादेव प्रति विनय करें हैं कि हे हर ! मैं रामको चरणचेरौ नाम गुलाम हौं, रावरो नाम

आपको सुयश वेद पुराणमें यह सुनि कि काशी-जीमें आप मुक्तिदायक हो पायनतर नाम शरणागत सुरसरि गंगाजीके तीर श्रीकाशीजीमें आया हौं । हे महादेव ! वामदेव ! श्रीरघुनाथजी, कि जिनका मैं सेवक हौं तिनका स्वभाव और शील आप अच्छे प्रकार जानौ हौ कि प्रभु भक्तवत्सल हैं, नेहके नातेको जानै-हैं तौ मेरे बने बिगरेकी भीर नाम चिन्ता रघुनाथ-जीको है । (भीर लोकोक्त शब्द है कि जैसा बोल-चालमें कहते हैं कि हमको क्या भीर पडी है अर्थात् हमको कुछ चिन्ता नहीं) । सो आपसे प्रार्थनाका प्रयोजन यह कि एक तौ आप भूत प्रेत प्रमथा धिपति हौ सो भूतनकारिके जो बाधा होय आपको रक्षा करनी चाहिये । दूसरे मैं रामको चरण चेरो कि जिन रामसे परिपूर्ण नातौ नेह आपको है यह सम्बन्ध भी मेरे और आपके बीचमें है,तीसरे आपका सुयश सुनि आपके शरणमें प्राप्त हौं शरणागत सर्वदा सर्वत्र कृपा-

योग्य होवे हैं परंतु हे भूतनाथ ! उसके विपर्यय विषमभूत बाधा करिके तुलसी विकल हो रहा है तासे विनती आपसे करना पडी. पाहि रक्षा करिये, कुपीर नाम कठिन पीरमें पचत नाम परास्त हो रहा हूँ । याचना यह है कि जो मारिये तौ खास काशीवासमें मृतक को जो फल अर्थात् रामधामकी प्राप्ति सो अनायास नाम विना श्रम अर्थात् विना कष्ट प्राप्त होवै और जो जिवाइये तौ ऐसा कीजिये कि निरुज शरीर नाम रोगरहित देह रहै ॥ ४१ ॥

जीवेकी न लालसा दयालु महादेव मोहिं,
मालुम है तोहि मरिबेईको रहत हौं ।
काम-रिपु रामके गुलामनिकौ कामतरु,
अवलम्ब जगदम्ब सहित चहत हौं ॥ रोग
भयो भूतसों कुसूत भयो तुलसीको, भूत-
नाथ पाहि पदपंकज गहत हैं । ज्याइये

तौ जानकीजीवनकौ जन जानि, मारियेतौ
मांगी मीच सूधी मैं कहत हौं ॥ ४२ ॥

हे दयालु महादेव ! मुझे जीनेकी कुछ कांक्षा नहीं। आपको विदित है कि मैं एक तौ काशीजीमें मरनेको ही रहता हूं नाम वास करता हूं, काहे कि पुरी आपकी स्वाभाविक मुक्तिदायक है । दूसरे विघ्नकर्त्ता जो काम ताके आप रिपु हौ, नाम ही आपका कामारिपु है तौ कामसे भी मुझे कुछ डर नहीं रहा, तीसरे रामके गुलामोंके आप कल्पवृक्ष अर्थात् सर्व-फलदायक हौ, चौथे जगदम्ब जो श्रीपार्वतीजी तिन सहित आपकी अवलम्ब चाहता नाम भरोसा रखता हूं और किसीसे प्रयोजन नहीं । इतनेपर भी भैरवादि प्रेरित भूत बाधाकारि रोग उत्पन्न हुआ कि जिससे तुलसीका कुसूत नाम उरझ्यौ सूत हो गया कि जिस सूतका कोई ग्राहक नहीं। भाव यह कि अपने स्वामीकी पुरी छोडि यहां आय

रहूं हूँ कि जहां इस दशाको प्राप्त हुआ तौ अब मैं अपने स्वामीसे कौन मुँह लगाय विनती करौं, तासें हे भूतनाथ! अर्थात् जिन भूतनकरि बाधा होवे है तिनके आप नाथ स्वामी हौ, पाहि नाम रक्षा करौ, आप ही के पदकमल गहत हौं और विनती करौ हौं कि जो ज्याइये तौ जानकीजीवनकौ जन जानि भाव मेरी ओरसे ज्याइने की कुछ इच्छा नहीं, काहे कि मैं काशीजीमें मरनेको ही आया हूं कि जैसा ऊपर कहि चुके। हाँ, आपकी प्रसन्नता होय तौ रामदास जान करि ज्याइये और जो मारिये तौ मांगी मीच नाम ऐसी मौत दीजिये कि जिसमें पीडा न होय, यह बात मैंने सीधी नाम निष्कपट ह्वै कही है॥ ४२॥

जीवो जग जानकीके जीवनको जन कहाय,
मरिबेको वाराणसी वारि सुरसरिको।
तुलसीके दुहूं हाथ मोदक प्रमोदक है, ऐसौ

ताहि शोच पोच करि है नजरि को ॥
मोकों झूठौ सांचौ लोग रामकौ कहत
सब, मेरे मन मानहै न हर को न हरि को।
भारी पीर दुसह शरीरतें विकल होत, सोउ
रघुवीर बिनु दूर सकै करि को ॥ ४३ ॥

गोस्वामीजी अब अपने मनको बोधित करै हैं कि जीना तौ जगविषे जानकीजीवनका जन नाम दास कहलाता और मरना तौ काशी पुरी और गंगाजलके प्रभाव करि मुक्ति मिलता। उभय प्रकार तुलसीके दोनों हाथमें प्रमोदक नाम आनंदके मोदक लड्डू हैं, तौ जिसको ऐसा है फिर शोच पोच नाम तुच्छ पर नजर नाम दृष्टि कौन करै। हां, इतना विशेष है कि समस्त लोग मेरेको झूंठा सच्चा रामका गुलाम कहै हैं; पर मेरे मनमें न हर महादेवका मान है, न हरि भगवानका मान है। भाव यह कि किसीकी सेवा पूजा हो नहीं

सकी मान कैसे होवै । तब भी यह निश्चय है कि जो यह असह्य भारी पीर शरीरतें उत्पन्न है कि जिससे मैं विकलताको प्राप्त हौं (सोउ रघुवीर बिन) उसी रघुनाथ विना कि जिसका मैं झूंठा सच्चा गुलाम कहाता हूं कौन दूर कर सकता है, विदित रहै कि शिवजी-की कृपा व्यतिरेक कार्य सफल नहीं होता यथा-"फल इच्छित विन शिव आराधे । मिलहि न कोटि योग जप साधे ॥" तासे गोस्वामीजीने पूर्व ही विनती करी और आगे करेंगे, कि हे महाराज ! आप प्रसन्न होउ आपकी प्रसन्नतासे श्रीरामजू शीघ्र कृपा करेंगे ॥ ४३ ॥

भूत भय भावतें पिशाच प्रेतहूँतें प्रिय,
आपनो समाज शिव आप नीके जानि
ये। नाना वेष वाहन विभूषण वसन
साज,खानपानबलि पूजाविधिको बखानि
ये ॥ रामके गुलामनिकी प्रीति रीति

सूधी सब, सबसों सनेह सब ही कौ सनमानिये । तुलसीकी सुधरे सुधारे भूतनाथहीके, मेरे माइ बाप गुरु शंकर भवानिये ॥ ४४ ॥

हे शिवजी ! यदि आप कहैं कि जो तुमको भूतादि बाधा है तो पहले उनको प्रसन्न करो काहे कि वह हमारा प्रिय समाज है, उनकी प्रसन्नता व्यतिरेक हम प्रसन्न नहीं होवेंगे तापर कहै हैं कि आपको तौ भूत, पिशाच, प्रेतका समाज उनके भय भाव करिके भी प्रिय है अर्थात् उनका कोई भजनका भाव नहीं केवल वैर भाव भय भाव इत्यादि क्रूर आचरण करै हैं जिसको आपहीकी प्रकार जानौ हौ। कैसे हैं भूतादि किंकर आपके कि जिनका वेष,वाहन,भूषण, वसन,साज, खान, पान, बलिदान, पूजाविधान नाना प्रकारका है जिसका वर्णन कौन कर सकता है और रामके गुला-

मनकी प्रीति रीति सब सीधी है; किसीसे वैर नहीं, सबसे स्नेह है और सबका सन्मान है। भाव यह कि जब रामके गुलामों और आपके किंकरोंमें यह विपरीत भाव है तौ कहिये कैसे निर्वाह होय, काहे कि वह तौ अपने स्वाभाविक धर्मको करै हैं और यहां प्राणांतक क्लेश होवै है–" कहौ रहीम कैसे बने, केर बेरको संग । वे रस डोलें आपने, उनको फाटे अंग " । अब एक भरोसा है कि भूतनाथके ही सुधारे तुलसीकी सुधरेभी, मेरे माई, बाप, गुरु श्रीशंकर और भवानी ही हैं॥४४॥

सीतापति साहब सहाय हनुमान नित,
हित उपदेशको महेश मानो गुरु कै ।
मानस वचन काय शरण तिहारे पाय,तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुर कै ॥ व्याधि
भूतजनित उपाधि काहू खलकी, समाधि
कीजे तुलसीको जान जन फुर कै। रघु-

नाथ कपिनाथ भोरानाथ भूतनाथ, रोग-
सिंधु क्यों न डारियत गाय खुर कै ॥४९॥

श्रीसीतापति रामचंद्र मेरे साहब नाम स्वामी हैं और श्रीहनूमानजी नित सहाय रक्षाकर्ता हैं; पुनः हित उपदेशके अर्थ कि जिसमें जीवका कल्याण है श्रीमहादेवजीको गुरु करिके मानता हौं। मनसा, वाचा, कर्मणा करिके तुम तीन हू देवनके चरणोंकी शरण हौं अर्थात् मन करि रघुनाथजीके पायनकी शरण हौं यानी मन पायन में लगाये हौं, पुनः वचन करि हनूमानजीके पायनकी शरण हौं अर्थात् वचनते गुण गान करौं हौं पुनः देहकरि शिवजीके पायनकी शरण हौं, भाव-देहकरिके पुरीमें वास करौं हौं, तुम्हारे भरोसे नाम बलसे किसी देवताको देवता करिके नहीं जाना,भाव-अर्चन वन्दनादि किसीका नहीं किया। अब किसी खल दुष्ट की उपाधीतें भूतजनित व्याधि भई जहां किसी कारणसे

धर्महानिकी चिन्ता आवै उसको उपाधि कहतेहैं यथा 'उपाधिर्ना धर्मचिन्ता'' इत्यमरः। अर्थात् किसी खलकी लगाई उपाधि है। भाव—मेरे धर्मकी हानि किया चाहता है उसीके प्रभावसे भूतजनित व्याधि बाहु पीरादि हुई तासे प्रार्थना है कि फुर नाम सत्य करि अपना जन जानि तुलसीको समाधि नाम व्याधि मिटाय निरुज देह कीजै कि मन आदि स्थिर होयँ। हे रघुनाथ, कपिनाथ, भोलानाथ, भूतनाथ ! इस रोग-सिन्धुको गायखुरके जल सदृश क्यों न उलीच डारिये, भाव—शीघ्र ही रोग निवारिये॥ ४५॥

सानुग सगौरि सानुकूल शूलपाणि लोक,
लोकपाल सकल लषण राम जानकी।
लोक परलोकको विशोक सो त्रिलोक
बात, तुलसी तमाइ कहा आन गीरवान-
की॥ केशरीकिशोर बंदीछोरके निवाजे

सब, कीरति विमल कपि करुणानिधा-
नकी। बालक ज्यों पालि है कृपालु मुनि
सिद्ध ताकों, जाके हिय हांक सदा रहै
हनुमानकी ॥ ४६ ॥

अब फिर श्रीमहावीरजी प्रति स्तुति करैं हैं—अनुग
जो अनुचर पुनः गौरी जो पार्वतीजी तिनसहित
शूलपाणि नाम महादेव और समस्त लोक, लोकपाल
और श्रीराम लक्ष्मण जानकी सानुकूल नाम प्रसन्न हैं
जिहि पर। (त्रिलोक बात) तीनहू लोकमें विदित
है कि (सो) श्रीमहावीर लोक परलोकको विशोक नाम
आनंद है तौ फिर तुलसीको कहा नाम क्या (तमाइ)
तमा फारसी शब्द नाम कांक्षा आन नाम अन्य
गीर्वाण नाम देवताकी है। भाव—और किसी देवतासे
प्रयोजन नहीं क्योंकि केशरीकिशोर बंदीछोर श्रीहनू-
मानजीके निवाजे नाम अनुगृहीत सभी हैं अर्थात्

तीन हूं लोकमें यावत् वीर हैं ते सब रावणके बंदीखा-
नेमें रहे, तिनके हेतु अनेक भांति श्रम करि परिवार
सहित रावणको नाश कराय बंदी छोडाय सबको
घरोंमें वसाये, ऐसी निर्मल कीर्ति करुणानिधान
श्रीहनुमानजीकी है। जिसके हृदयमें सदा हांक
हनूमानजीकी रहैगी अर्थात् स्मरण रहैगा तिसको
मुनि, सिद्ध, कृपालु (बालक ज्यों पालि है) पुत्रवत्
प्रिय मानि सब रक्षा करेंगे ॥ ४६ ॥

बाहुक सुबाहु नीच लीचर मरीच
मिलि,मुखपीर केतुजा कुरोग यातुधान
हैं। राम नाम जप याग कियौ चहौं
सानुराग, काल कैसे दूतभूत कहा मेरेमान
हैं ॥ सुमिरे सहाय राम लषण आखर
दोउ, जिनके समूह शाके जागत जहान हैं।

तुलसी सँभारि मख ताडका सँहारी भट,
बेधे बरगदसे बनाय बान बान हैं ॥४७॥

बाहुक जो बाहुशूल सोई नीच सुबाहु, पुनः लीचर जो देहाशक्ति क्षीणता सोई मारीच ।मिलि नाम सबल हैं पुनः मुखपीर सोई केतुजा नाम सुकेतु दैत्यकी पुत्री ताडका,पुनः अन्य रोग अन्य यातुधान हैं।रामनाम-रूपी जपयज्ञ अनुरागसहित करनेकी मेरी कांक्षा है, परंतु यह राक्षस काल कैसे दूत भूत महाभयंकर(कहा मेरे माने हैं) क्या मेरी मानेंगे अर्थात् नहीं मानेंगे, काकु है । तहां यह आशा है कि दोन हू आखर नाम अक्षर रकार मकार राम लक्ष्मण रूप स्मरण करनेसे सहायता करेंगे, जिनके शाके समूह नाम अनेक यश जगत् वि-ख्यात हैं। कि,जिन्होंने हे तुलसी ! श्रीविश्वामित्रके यज्ञ-की रक्षा करी, प्रथम ताडकाको नाश करि पुनः भारी योधा सुबाहु आदि राक्षसोंको बान बान करि ऐसा बेधित

किया जैसे कोई बरगदके फूलको कि जो वेधनेमें सुगम है छेदन करे ॥ ४७ ॥

कहौं हनुमानसों सुजान राम-रायसों,
कृपानिधान शंकरसों सावधान सुनिये ।
हरष विषाद- राग-रोष-गुण- दोष-मयी,
बिरची बिरंचि सब देखियत दुनिये ॥
माया जीव कालके करमके सुभालके,करै
या राम वेद कहैं सांची मन गुनिये ।
तुमतें कहा न होय हाहा सो बूझैये मोहिं,
हौं हूँ रहौं मौन ही वयो सो जानि लूनिये४८

श्रीहनुमानजी, सुजान परम चतुर श्रीरामचन्द्र, कृपानिधान शंकर अर्थात् कल्याणकर्ता श्रीशिवजीसे प्रार्थना करौ हौं सावधान मन थिर करि सुनिये—कि यह दुनिया विरंचि नाम ब्रह्माकरि विराचित नाम रची गई हर्ष,विषाद, (राग) प्रीति, (रोष) विरोध इत्यादि

गुण- दोषमय दीख पडती है। माया जीव, काल, कर्म, सुभाव के कर्ता रामको वेद बखानै हैं (सांची मन गुनिये) मनके विचार करनेसे सत्य भी भासै है अर्थात् सबकी गति रघुनाथजीके हाथ है प्रेरक सबके राम ही हैं, यथा—" बोले विहँसि महेश तब, ज्ञानी मूढ नकोई जेहि जस रघुपति करहिं जब, सो तेहि क्षण तस होई।" फिर तुमतें क्या नहीं हो सकै; मुझे समझायकरि कहिये कि मौन नाम चुप होय रहौं, वार वार क्यों प्रार्थना करूं यह जानकरि कि जैसा बोया जाता है तैसा लुना जाता है अर्थात् जसा किया रहै वैसा फल पाया ॥ ४८ ॥

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो, राम-
नाम लेत मांगि खात टुक टाक हौं। पर्‌यो
लोक-रीतिमें पुनीत प्रीति रामराय,मोह-
वश बैठो तोरि तरक तराक हौं ॥ खोटे

खोटे आचरण आचरत अपनायौ, अंजनी-
कुमार शोध्यौ रामपाणि पाक हौं । तुल-
सी गुसाईं भयौ भोरे दिन भूल गयौ, ताकौ
फल पावत निदान परिपाक हौं ॥ ४९ ॥

बालपने नाम लरकाईसे कि जिस अवस्थामें का-
मादि वेग विशेष नहीं होता सीधा मन राम सन्मुख
हुआ और देहके निर्वाह हेतु टूक टाक प्रयोजनमात्र
मांगि खाइ प्रीतिपूर्वक राम नाम लेता रहा । जब
युवावस्था हुई तौ लोकरीतिमें परचो अर्थात् विवाहादि
उत्सव हुए, धन पुत्रादिकी लालसा बढी कि जिससे
मोह वश होकर रामजूकी पुनीत पवित्र प्रीति (तोरि
तरक तराक हौं) तोरि नाम तोडकर तरक पारसी
शब्द नाम छोड बैठचो तराक शीघ्र ही । ऐसे खोटे
खोटे आचरण आचरत नाम करने पर भी श्रीअंजनी-
कुमारने (रामपाणिपाक) रामजूके पुनीत हस्तकमलसे

शोध्यौ नाम शुद्ध कराय अपनाय लिया, (पाक पारसी शब्द नाम पवित्र)। तब तुलसीसे गुसाईं तुलसीदास हो गया, परंतु इस मान बडाई महत्त्वादिमें भोरे दिन नाम प्रभुकी सहायता और भूरि कृपाके दिन भूल गया, जिससे निदान नाम अंतमें प्रभुकी विमुखतारूप वृक्षका परिपाक नाम पक्का दुःख रूप फल पानेके योग्य हुआ ॥ ४९ ॥

जानत जहान हनुमान को निवाजौ जनु,-
मान पन बल बोलि न बिसारिये । दया
योग तुलसी कबहुं कहौ चूक परी, साहब
स्वभाव कपि समुझि सँभारिये ॥ अपराधी
जानि कीजे शासति सहस भांति,मोदक मरै
जो ताहि माहुर न मारिये ।साहसी समीरके
दुलारे रघुवीरजीके, बहु-पीर महावीर
वेगि ही निवारिये ॥ ५० ॥

परंतु जहान जानै है कि यह तुलसीदास श्रीहनू-मानजीकौ निवाज्या नाम कृपापात्र है, भाव–हनूमा-नजीकी ही कृपासे तुलसीदासजी प्रभुकी शरण गये बडाई पाई इत्यादि वृत्तान्त संसारमें विदित है, सो हे महाराज! अपने प्रण बल बोलिवचनका अनुमान करि मुझे न बिसारिये। तुलसीदास दया योग्य है, यदि यह कहिये कि कभी चूक परी तो हे कपि श्रीमहावीरजी ! आपके साहब जो श्रीरघुनाथजी तिनकौ स्वभाव समुझि संभार करिये अर्थात् आपके स्वामीकौ स्वभाव है कि बिगरी भी सुधार लेतेहैं, यथा रामायणे-"रहत न प्रभु चित चूक किये की। करत सुरति शत बार हियेकी ॥"हे कपि! ऐसा समुझि आप भी मुझ सेवककी संभार करिये। यद्वा–साहब स्वभाव नाम अपनी साहबी पर दृष्टि करि संभारिये नाम अप-राध क्षमा करिये। और जो आपकी प्रसन्नता इसीमें है

तोअपराधी जानकर सहस भांति शासना कीजै मेरा क्या वश है, परंतु इस दंड देनेकी कुछ आवश्यकता नहीं, क्योंकि जो मोदक नाम लड्डूसे ही मर जावे उसको विष देकर न मारिये अर्थात् मैं पूर्व ही कहि चुका कि मुझे जीने की कांक्षा नहीं मरनेकोही बैठा हूं तौ फिर शासनाका क्या प्रयोजन है ऐसा समुझि हे साहसी समीर के नाम पवन पुत्र, रघुवीरजीके प्यारे ! बाहु पीर वेग ही निवारिये ॥ ५० ॥

स०—कोऊ करै बलि देव देवायकौ,कोऊ करै
गुणतैं चतुराई। कोउ करै बहुभांतितें
भेषज,मित्र अनेक सयान बुलाई॥ सत्य
कहौं लिखि कागद कोरे, सो मोरे नहीं कछु
और उपाई। कर्म वचा मनसा ही सदा,
तुलसीके तुही हितु है कपिराई॥ ५१॥

कोऊ तौ देव-देवाय अर्थात् देवी, देवताको बलि-

दान करै, कोऊ गुणतें चतुराई करै। 'देव-देवाय' शब्द लोकोक्त है, यथा-देई देवता अर्थात् देवी देवता। कोऊ मित्रों और अनेक सयानोंको बुलाय अनेक भांति से भेषज नाम औषधि करै है, परंतु मैं कोरे कागद पर लिखि सत्य कहता हूं कि मेरे और कुछ उपाय नहीं हैं। मनसा वाचा कर्मणा करि तुलसीके तौ सदा हितकारी हे कपिराय! तुम ही हौ ॥ ५१ ॥

मान लई जनकी विनती अति, दीनदयाल
बली कपिनाथा। दूर कियौ रुज जोर
तिही क्षण, फेरि कृपा कर शीतल हाथा ॥
बाहु व्यथा नहिं व्यापहि फेर, हिये सुमिरे
हरिके गुण गाथा। पाय प्रतीति सदा
तुलसी भज,वायुतनय रघुनायक साथा॥५२॥

अतिदीनदयाल बली कपिनाथने विनती जनकी मान लई। कृपाकर शीतल हस्त फेरि ताही क्षण

रोगकी प्रबलताको-दूर कर दिया । निश्चय है कि हरिके गुणसमूह स्मरण करनेसे बाहुव्यथा अब फेर व्याप्त नहीं होगी । हे तुलसी ! यह प्रतीति पाय सदा रघुनायकसहित वायुतनय महावीरजीका गुणानुवाद करो ॥ ५२ ॥

क०-तात मात द्रोहकी कै विप्रवंशकोहकी कै,
परनारी उर लाये धोखे काहू रातीकी ।
गुरुसों विरोधकी कै अशन अशोधकी
कै, हरिजनविमुख गये भांतिअज्ञाती की ॥
मृषा शाक भरेकी कै परधन हरेकी कै,
कबहुँक लोभ कीन परधन थाती की ।
तुलसी कहत कर जोरि छल छांडि
नाथ, वेगि हरौ ऐसे संभौ बडी पीर
छाती की ॥ ५३ ॥

अब छातीकी पीर निवृत्तिके लिये निवेदन करै

हैं । माता–पिताके द्रोहसे, कै विप्र वंशके कोह नाम क्रोधसे, कै कोई राती नाम आराती अर्थात् शत्रुकी प्रेरणा करि धोका खाई परस्त्री रमण करनेसे है । अथवा गुरुके विरोधसे है, कै अशन अशोध नाम भक्षाभक्षसे है, कै अज्ञाती नाम अज्ञताकी भांतिसे हरिजन विमुख गये सत्कार नहीं किया । कै अन्यथा शाक भरनेसे है, कै पराये धनकी थाती जो धरोहर तिसके कमी लोभ करनेसे है । तुलसी हाथ जोरि निश्चय विनती करै है कि पूर्व कथित सम्बन्धसे संभव नाम उत्पन्न जो छातीकी बडी पीर ताको वेग ही हरण कीजिये ॥ ५३ ॥

रचिके सुवेष ठगे संतन द्विजन कैधौं,
मित्रसों विरोध कीन्ह लोभलागि थातीकी ।
कैधौं कुलवन्ती नारि घरतें निकारि दीन्ही,
प्रीति मानि चेरिनसों अतिनीच जातीकी ॥

तुलसी कहत कैधौं कुलकी कलंकिनी है,
कैधों प्रेरीआई काहू दुष्ट द्विजघातीकी ।
पापिनी निशाचरीसी जानिकै कृपा-
निधान, महावीर दूर कीजै पीर बडी
छातीकी ॥ ५४ ॥

सुंदर वेष बनायकरि संतों और ब्राह्मणोंको ठग लिया, कैधों परधन हरणके लोभार्थ मित्रसे विरोध किया । कैधौं कुलीन स्त्रीको घरसे निकारि दास्यादि अति नीच जातिसे प्रीति मानी । तुलसीदास कहै हैं कि, कैधौं कुलकी कलंकिनी है जो किसी दुष्ट द्विज-घातीकी प्रेरणासे आई ? हे कृपानिधान महावीर ! इस छातीकी विषम पीर पापिनी निशाचरी सदृश जानि दूर कीजिये ॥ ५४ ॥

सवैया ।

जानौं नहीं पहिचानत ना कोउ तारूकी
व्याधि महा दुखदाई । कर्म प्रभावके

भोगनतें यह पापिनी काहूके प्रेरेतं आई ॥
भेषज युक्तकिये सुठि बाढत छूटहि वेगि
सो एक उपाई । करौ मन ध्यान भजो
तुलसी कपिनाथ सदा जनहेतु सहाई ॥५५॥

तारूकी पीर निवारण हेतु विनती करै हैं--यह जो तारूकी महादुखदाई व्याधि न तौ मैं उसको जानौं और न किसी और के लक्षमें आवै कि किस कारण प्रगट हुई । भासित होता है कि कर्म--प्रभावके विषयात्मक भोगोंसे यह पापिनी किसीकी प्रेरणासे आई । (सुठि) सुंदर (भैषज) औषधि युक्त करनेसे और भी बढै है, इससे शीघ्र निवृत्ति होनेका एक उपाय है कि हे तुलसी ! मनसा वाचा कर्मणा करि कपिनाथ जः सदा जनहेतु सहायक हैं तिनको भजौ ॥ ५५ ॥

क०–पायपीरपेटपीर बाहुपीर मुखपीर,जर्जर
सकल शरीर पीरमई भई है । देव भूत

पितर करम खल काल ग्रह, मोपर दवारे दम आनकसी दई है ॥ हौं तो विना मोल ही बिकानो बलि बारेहीते ,ओट राम-नामकी ललाट लिखि लई है । कुंभजके किंकर विकल बूडे गोखुरनि, हाय!हाय !! रामराय ऐसी कहूँ भई है ॥ ९६ ॥

पायपीर, पेटपीर, बाहुपीर, मुखपीर इत्यादि पीर-मयी सकल शरीर है ताहीसे जर्ज्जर नाम अशक्त दुर्बल है । (देव) ग्रामदेव, (भूत) भैरवादि, (पितर) वंशमें मरे हुए, (कर्म) संचित-क्रियमाण-वर्तमान, (खलकाल) दुष्टकलिकाल, (ग्रह) सूर्यादि इन सबोंने मेरे ऊपर (दवारे दई है) दौर करी हैं (दम आनकसी) जैसे आनक नाम नगाराकौ दम नाम दंड अर्थात् डंका बजाय सब मेरे ऊपर धाये हैं (दम) दंड यथा-"साहसं तु दमो दंडः" इत्यमरः ।

(आनक) नगारा डंकादि बाजा, यथा-"भेर्यामानक-दुन्दुभीइत्यमरः" आपकी बलिहारी जाऊँ, मैं तो बाल्या-वस्थासे ही विना मोलके आपके हाथों बिक चुका अर्थात् गुलाम हुआ, पुनः राम-नामकी ओट ललाट नाम माथेमें लिख लई अर्थात् माथेमें राम नाम लिखि गुलामीका तकमा लगाया इतनेपर भी अनेक व्याधिकारि विकलता होय तौ कैसा दृष्टिमें आवै है कि कुंभज नाम अगस्त्य ऋषि जिन्होंने विना प्रयास समुद्र शोष लिया तिन्हका किंकर नाम सेवक गौके खुरमात्र जलमें विकल होकर डूब मरै, हाय ! हाय !! राम–राय रघु-नंदन ! ऐसी कहूं भई है अर्थात् नहीं भई ॥ ५६ ॥

सर्व आज्ञा हीन सब साधन विहीन मन,
वचन मलीन कुल काम करतूति है।
बुधि बलहीन भाव भगति विहीन सब,
ज्ञान गुण हीन दीन भागी हू विभूति हैं ॥

तुलसी गरीबनी के गाइये महाराज; राम
नाम लेत बैठी विमल विभूति है। प्रेम
रामनामसों प्रतीति रामनामसों, प्रसाद
रामनामके पसारि पाइँ सूत है॥ ९७॥

(सर्व आज्ञाहीन) वेद, शास्त्र, गुरु, माता, पितादि-की आज्ञारहित (सब साधन विहीन) जप, तप, यम, नियमादि करि हीन, मन, वचन और (कुल) पारसी शब्द नाम समस्त कार्य मलिन। बुद्धि, बल, भाव, भक्ति, सम्पूर्ण ज्ञान और गुणकरि हीन भाग्य और विभूतिकरि भी दीन। अब आधार यह कि तुलसी गरीबनीके जो महाराज राम, तिनके गुणग्राम गान करना चाहिये, जिनको नाम जो निर्मल विभूति ताको स्मरण करते सोई तुलसी अद्यापि बैठी नाम विद्यमान अर्थात् जगत् विख्यात है। [तुलसी पूर्व जन्ममें वृन्दा नामकरि जालंधरकी स्त्री यद्यपि पति-

व्रत धर्मनिष्ठ रही पर शापवश तुलसी भई ताहीसें गरीबनी पद दिये]। सो नामहीके प्रेमसे, नामहीकी प्रीतिसे, नामहीके प्रसादसे ब्रह्मादिवंदित होकर सुखपूर्वक पांव पसारकर सोवै है ॥ ५७ ॥

छप्पय–राम मातु पितु बंधु सजन गुरुपूज्य
परमहित । साहब सखासहाय नेह नाते
पुनीत चित ॥ देश कोश कुल कर्म धर्म
धन धाम धरणि गति । जाति पांति सब
भांति लागि रामहिं हमार पति ।परमार्थ
स्वारथ सुयश, सुलभ रामतें सकल फल ।
कह तुलसिदास अब जब कबहुं, एक
रामतें मोर भल ॥ ५८ ॥

इति श्रीगोस्वामी तुलसीदासजीकृत–
श्रीहनुमानबाहुक (सर्वाङ्ग–
रक्षामंत्र) समाप्त ।

यावत् सम्बन्ध है सबकी आशा छोडि श्रीरघुनाथ-

जीविषें मन स्थिर करै है कि मेरे तौ माता, पिता, बंधु, सुजन अर्थात् स्वजन नाम सम्बन्धी, गुरु,पूज्य कहे इष्ट परम हितकर श्रीराम ही हैं। साहब स्वामी, सखा, सहायक इन सबके स्नेहके जो नाते सो पुनीत नाम पवित्र चित्ततें रामहीविषे हैं। देश,(कोश)खजाना, कुलके धर्म, कर्म,(धन) द्रव्य, (धाम)घर, (धरणी) पृथ्वी, गति–भरोसा, जातिपांति और सबभांति हमारी पति मर्यादा एक श्रीरघुनाथसेही लागी नाम लगी है। परमारथ परलोकमें गति, स्वारथ लोक सुख, जगमें सुयशादि यावत् फल हैं ते सकल एक श्रीरघुनाथजीतें सुलभ होयँ हैं। श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी कहे हैं कि चाहै अब होय चाहै कबहूं होय जब होय तब एक श्रीरघुनाथजीसे ही मेरा भला होयगा। यह अनन्य-ताका लक्षण है, यथा–"नातो नेह रामसों करि सब नातौ नेह निबैहौं।" "त्वमेव माता च पिता त्वमेव

त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव । त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव" ॥ ५८ ॥

दोहा–कहैं सुनैं जे नर पढैं, पवनतनय गुण ग्राम ।
प्रणत विहारीलालकी, तिनकहँ सीताराम ॥

इति श्रीठाकुर विहारीलालकृत श्रीहनूमानबाहुक (सर्वांगरक्षामंत्र) की भाषाटीका समाप्त ।



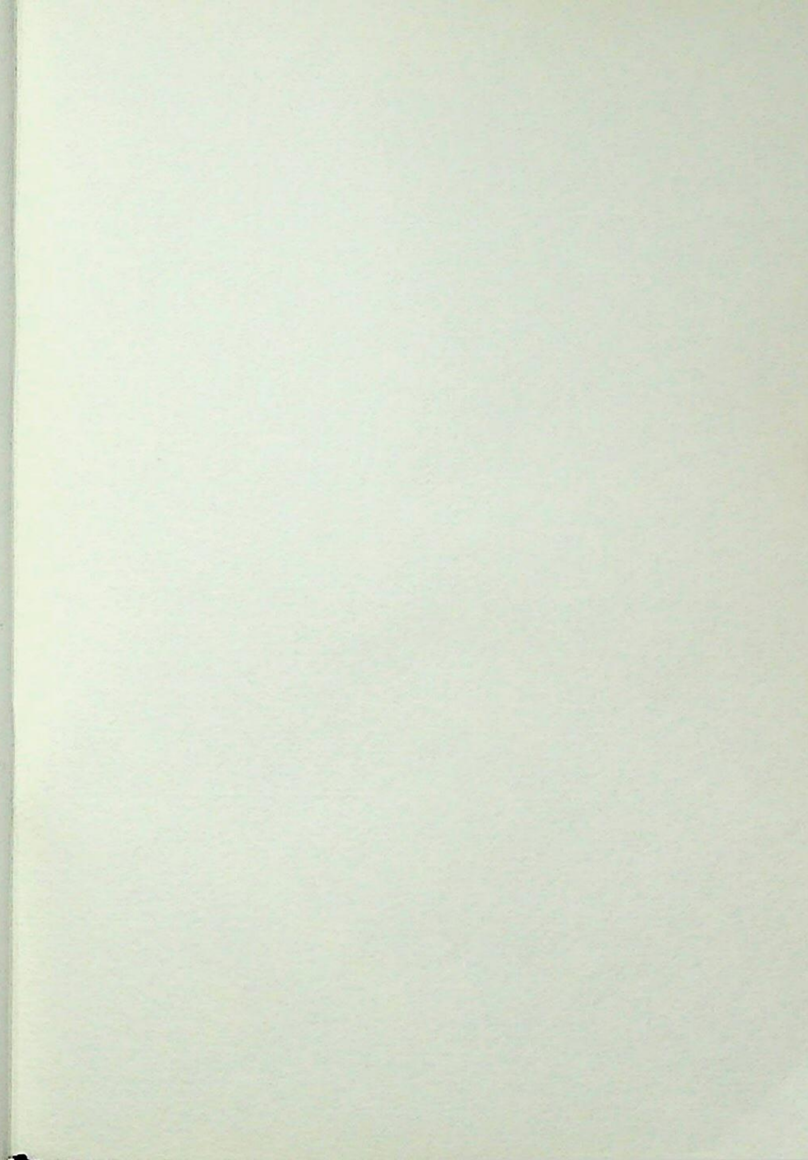
हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर, मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५, फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डिंग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१. दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.



KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

